



दिल्लीपनगर में आज होगा रावण दहन

दमण से प्रकाशित हिन्दी दैनिक



Asli Azadi Dainik
@AsliAzadiDainik



aslizadidainikofficial

आसली आज्ञादी

■ वर्ष: 22, अंक: 29 ■ दमण, मंगलवार 20, अक्टूबर, 2026 ■ पृष्ठ: 8 ■ मूल्य: 2 रु ■ RNI NO-DDHIN/2005/16215 ■ संपादक- विजय जगदीशचंद्र भट्ट

केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह पुलिस स्मृति दिवस 21 अक्टूबर को नई दिल्ली में राष्ट्रीय पुलिस स्मारक पर शहीद पुलिसकर्मियों को अर्पित करेंगे श्रद्धांजलि

■ गृह मंत्री Fight Against Drugs के संदेश पर आयोजित एक देशव्यापी मोटरसाईकल रैली को झंडा दिखाकर रवाना करेंगे ■ इस रैली में देशभर के सभी राज्यों, केंद्रशासित प्रदेशों एवं केंद्रीय बलों के मोटरसाईकल सवार एकता नगर, गुजरात पहुँच कर एकता परेड-2026 में सम्मिलित होंगे - 21 अक्टूबर, 1959 को लद्दाख के हॉट स्प्रिंग क्षेत्र में सशस्त्र चीनी टुकड़ी द्वारा किए हमले में पुलिस के 10 वीर जवानों ने अपने प्राणों की आहुति दी थी ■ इन शहीदों एवं ड्यूटी के दौरान प्राणों की आहुति देने वाले अन्य सभी पुलिसकर्मियों की स्मृति में 21 अक्टूबर को पुलिस स्मृति दिवस के रूप में मनाया जाता है ■ पुलिसकर्मियों द्वारा दिए गए बलिदान को चिरस्मरणीय बनाने तथा राष्ट्रीय सुरक्षा व एकता बनाए रखने में पुलिस की उत्कृष्ट भूमिका का सम्मान करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 2018 में राष्ट्रीय पुलिस स्मारक देश को समर्पित किया था

पीआईबी, नई दिल्ली 19 अक्टूबर। केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह पुलिस स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में बुधवार, 21 अक्टूबर 2026 को नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय पुलिस स्मारक पर शहीद पुलिसकर्मियों को श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। गृह मंत्री एक मोटरसाईकल रैली को झंडा दिखाकर रवाना करेंगे, जिसमें राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों (जम्मू व कश्मीर, लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़ व दिल्ली), केंद्रीय सशस्त्र बलों (CRPF, CISF, BSF, SSB, ITBP एवं NSG) और कुछ केंद्रीय पुलिस संगठनों (RPF, NDRF एवं NIA) के लगभग 90 सवार होंगे। यह रैली Fight Against Drugs के संदेश पर आयोजित एक देशव्यापी रैली का भाग है जिसमें देशभर के सभी राज्यों, केंद्रशासित प्रदेशों व केंद्रीय बलों के मोटरसाईकल

सवार एकता नगर, गुजरात पहुँच कर एकता परेड-2026 में सम्मिलित होंगे। 21 अक्टूबर, 1959 को लद्दाख के हॉट स्प्रिंग क्षेत्र में सशस्त्र चीनी टुकड़ी द्वारा घात लगाकर किए हमले में पुलिस के 10 वीर जवानों ने अपने प्राणों की आहुति दी थी। तब से प्रतिवर्ष 21 अक्टूबर पुलिस स्मृति दिवस के रूप में मनाया जाता है। पुलिस कर्मियों द्वारा दिए गए बलिदान तथा राष्ट्रीय सुरक्षा एवं एकता बनाए रखने में पुलिस की उत्कृष्ट भूमिका का सम्मान करते हुए प्रधानमंत्री जी ने पुलिस स्मृति दिवस, 2018 के अवसर पर चाणक्यपुरी, नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय पुलिस स्मारक देश को समर्पित किया। यह स्मारक पुलिस बलों में राष्ट्रीय पहचान, गर्व, उद्देश्यों में एकरूपता, एक समान इतिहास और भविष्य की भावना भरने के साथ-साथ उनकी इस प्रतिबद्धता को भी और सशक्त करता है कि उन्हें अपने

प्राणों की कीमत पर भी देश की रक्षा करनी है। पुलिस स्मारक में एक केंद्रीय शिल्पकृति के अलावा 'शौर्य की दीवार' तथा एक संग्रहालय भी मौजूद है। केंद्रीय शिल्पकृति के रूप में मौजूद एक 30 फुट ऊँचा ग्रेनाइट का एकल पाषाण खंड पुलिस कर्मियों की शक्ति, विनम्रता और निःस्वार्थ सेवा का प्रतीक है। इसी प्रकार 'शौर्य की दीवार' जिस पर शहीदों के नाम उत्कीर्ण हैं, कर्तव्य के पथ पर अपने प्राण न्योछावर करने वाले पुलिस कर्मियों की बहादुरी और बलिदान के अचल प्रतीक के रूप में उपस्थित है। संग्रहालय की संकल्पना में भारतीय पुलिस व्यवस्था के इतिहास और विकास यात्रा के दर्शन होते हैं। यह स्थान पुलिस बल और आम नागरिकों दोनों के मन में एक तीर्थ जैसा आदर रखता है। स्मृता राष्ट्रीय पुलिस स्मारक आम जनता के लिए सोमवार के अलावा अन्य सभी दिन खुला रहता है। केन्द्रीय



राष्ट्रीय पुलिस स्मारक चाणक्यपुरी, नई दिल्ली



कार्यक्रम के दौरान, गृह मंत्री शहीदों को श्रद्धांजलि देने के अतिरिक्त उपस्थित जन समूह को संबोधित करेंगे। यह कार्यक्रम हॉट स्प्रिंग के शहीदों को समर्पित वेदिका पर माननीय गृह मंत्री द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित किए

जाने के साथ संपन्न होगा। इस कार्यक्रम का दूरदर्शन, अक्सर तथा मीडिया में प्रसारण करने के साथ-साथ पुलिस बलों की वेबसाइट पर वेबकास्ट भी किया जाएगा। शहीदों की स्मृति में 22 से 30 अक्टूबर के बीच

CAPFs/CPOs द्वारा NPM पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे, जिसमें शहीदों के परिजनों को स्मारक पर आमंत्रित करना, पुलिस बैंड डिस्प्ले, मोटर साईकल रैली, शहीदों के निमित्त दौड़ आदि का आयोजन करने के

साथ-साथ पुलिस बल कर्मियों के बलिदान, शौर्य तथा सेवा को दर्शाने वाली वीडियो फिल्में दिखाना शामिल हैं। इस अवधि के दौरान सभी पुलिस बलों द्वारा देश भर में इसी प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे

संसदीय ओबीसी कल्याण समिति की बैठकों में सांसद उमेश पटेल ने ओबीसी के खाली पड़े पदों पर उठाये सवाल: आरक्षण युवाओं को सिर्फ कागज पर नहीं वास्तविक रूप से मिले

■ ओबीसी के रिक्त पड़े 402 पदों का हवाला देते हुए सांसद उमेश पटेल ने भर्ती में देरी पर जवाबदेही और समयबद्ध कार्रवाई की मांग की



असली आजादी न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली, 19 अक्टूबर। दमण-दीव के ओबीसी सांसद उमेश पटेल ने संसदीय ओबीसी कल्याण समिति की बैठकों में ओबीसी युवाओं को उनका अधिकार दिलाने के लिए जोरशोर से मांग उठाई। सांसद उमेश पटेल ने आज संसद की अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) कल्याण संबंधी समिति की दो महत्वपूर्ण बैठकों में ओबीसी युवाओं के रोजगार, शिक्षा, आरक्षण और संवैधानिक अधिकारों से जुड़े गंभीर मुद्दे प्रमुखता से उठाए। पहली बैठक में कृषि एवं किसान कल्याण विभाग तथा राष्ट्रीय बीज निगम (एनएससी) में ओबीसी प्रतिनिधित्व की समीक्षा के दौरान मंत्रालय द्वारा प्रस्तुत 402 रिक्त

पदों और सात बैकलॉग पदों पर सांसद उमेश पटेल ने सवाल उठाया। उन्होंने पूछा कि जब आरक्षण की व्यवस्था, रोस्टर और जिम्मेदार अधिकारी मौजूद हैं तो 402 पद आज भी खाली क्यों हैं? इन पदों पर नियुक्तियाँ कब होंगी और देरी के लिए जिम्मेदार कौन है? विशेष रूप से प्लांट प्रोटेक्शन डायरेक्ट्रेट में 219 रिक्त पदों तथा राष्ट्रीय बीज निगम में आठ ओबीसी रिक्त पदों को लेकर जवाब माँगा। दूसरी बैठक में सांसद उमेश पटेल ने कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (डीएआई) तथा भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईएआरआई) में ओबीसी वैज्ञानिकों, शोधार्थियों और विद्यार्थियों के प्रतिनिधित्व,

वैज्ञानिक भर्ती में देरी, 27% आरक्षण के अनुपालन, छात्रवृत्ति तथा उच्च शिक्षा के अवसरों का मुद्दा उठाया। सांसद उमेश पटेल ने इन बैठकों में कई प्रमुख मांगें रखीं। जिनमें 30 दिनों में ओबीसी रिक्तियों और बैकलॉग पदों की प्रमाणित रिपोर्ट दी जाए, 90 दिनों में लंबित पदों को भरने का भर्ती कैलेंडर प्रस्तुत किया जाए, सभी संबंधित संस्थानों के आरक्षण रोस्टर का स्वतंत्र ऑडिट कराया जाए, दमण, दीव और दादरा नगर हवेली के ओबीसी युवाओं के लिए कृषि, शिक्षा, वैज्ञानिक अनुसंधान, प्रशिक्षण और रोजगार मार्गदर्शन के विशेष कार्यक्रम शुरू किए जाएं, छह महीने में दोनों विभाग वास्तविक नियुक्तियों और सुधारात्मक कार्रवाई की अलग-

अलग एक्शन टेकन रिपोर्ट प्रस्तुत करें जैसे मुद्दे शामिल रहे। उन्होंने कहा कि ओबीसी युवाओं को आशवासन नहीं, अधिकार और अवसर चाहिए। सांसद उमेश पटेल ने कहा कि आरक्षण का उद्देश्य सरकारी फाइलों में केवल प्रतिशत दिखाना नहीं, बल्कि पिछड़े वर्ग के पात्र युवाओं को रोजगार, शिक्षा और सम्मानजनक प्रगति के अवसर देना है। जब पद खाली हैं और युवा बेरोजगार हैं, तो सरकार को बताना होगा कि नियुक्तियाँ कब होंगी। अब केवल आशवासन नहीं, जवाबदेही और परिणाम चाहिए। उन्होंने समिति से दोनों विभागों की समयबद्ध कार्रवाई सुनिश्चित करने तथा इन मुद्दों को समिति की कार्यवाही में दर्ज करने का आग्रह किया।

पाकिस्तान की जेल में बंद मछुआरों के परिजनों ने पशुपालन, डेयरी एवं मत्स्योद्योग मंत्री परसोत्तम सोलंकी से की मुलाकात

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दीव, 19 अक्टूबर। पाकिस्तान की जेलों में बंद दीव और गुजरात के मछुआरों के परिजनों ने आज गुजरात सरकार के पशुपालन, डेयरी एवं मत्स्योद्योग मंत्री परसोत्तम सोलंकी से मुलाकात कर मछुआरों की जल्द रिहाई की मांग की। दीव के छगन वामणिया की अगुवाई में माछीमार परिवारों ने मंत्री परसोत्तम सोलंकी के निवासस्थान पर पहुंचकर अपनी व्यथा बताई। मछुआरों के परिजनों ने पाकिस्तान की जेल में बंद मछुआरों को जल्द से जल्द छुड़ाने के लिए सरकार के समक्ष मदद की अपील की। परिजनों ने बताया कि पिछले 5 वर्ष से ज्यादा समय से पाकिस्तान की जेलों में भारतीय



मछुआरे बंद हैं। इनमें से कई लोगों की सजा पूरी हो गई है। फिर भी उन्हें रिहा नहीं किया जा रहा है। जबकि कई मछुआरों की पाकिस्तान की जेल में मृत्यु हो गई है जिसके चलते उनके परिजनों में चिंता का माहौल है। मछुआरों की पत्नियों एवं अन्य महिलाओं ने

बताया कि मछुआरों की रिहाई नहीं होने से परिजन काफी चिंतित हैं। उन्होंने अपने स्वजनों की जल्द से जल्द रिहाई करने गुहार लगाई। मंत्री परसोत्तम सोलंकी ने माछीमार परिवारों को आशवासन देते हुए कहा कि वे इस मामले को उच्च स्तर पर उठाएंगे और मछुआरों की

जल्द रिहाई के लिए सभी प्रयास करेंगे। इस मामले को लेकर उन्होंने टेलिफोनिक चर्चा भी की। मंत्री परसोत्तम सोलंकी के अथक प्रयासों से हाल में पाकिस्तान की जेल में मृत माछीमार के परिवार को 5 लाख की आर्थिक सहायता भी दी जाएगी।

कडैया अंबा माता मंदिर में आयोजित महाआरती में कई महानुभाव हुए शामिल

■ संघ प्रदेश श्रीडी भाजपा अध्यक्ष महेश आगरिया, दमण-दीव के पूर्व सांसद लालू पटेल, डीआईए प्रेसिडेंट पवन अग्रवाल सहित अन्य अग्रणियों ने उतारी माँ अंबे की आरती



असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण, 19 अक्टूबर। दमण के कडैया विस्तार स्थित अंबा माता मंदिर में नवरात्रि के अवसर पर महाआरती का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कई महानुभावों ने उपस्थित रहकर महाआरती का लाभ लिया। इस मौके पर संघ प्रदेश दादरा नगर हवेली और दमण-दीव के प्रदेश भाजपा अध्यक्ष महेश आगरिया, दमण-दीव के पूर्व सांसद लालू

पटेल, डीआईए प्रेसिडेंट पवन अग्रवाल सहित अन्य महानुभावों ने माँ अंबे की आरती उतारी। साथ ही अंबे माता का आशीर्वाद लेकर प्रदेश एवं देश की सुख, शांति और खुशहाली की मंगल कामना

की। इस दौरान कडैया विस्तार के बड़ी संख्या में नागरिक भी उपस्थित रहे।

मणिपुर में 24 घंटे में चार लोगों की हत्या, मुख्यमंत्री आवास के बाहर प्रदर्शन

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर में हिंसा की दो अलग-अलग घटनाओं में 24 घंटे के भीतर चार लोगों की हत्या हुई हैं। पहाड़ी इलाके में लकड़ी लेने गए तीन लोगों की संदिग्ध उगवादियों ने गोली मारकर हत्या कर दी, जबकि थोबल जिले में दो समुदायों के बीच हुई झड़प में एक व्यक्ति की मौत हुई थी। लगातार हो रही हिंसक घटनाओं से नाराज लोगों ने इंफाल में मुख्यमंत्री आवास के बाहर शव रखकर प्रदर्शन किया। पुलिस ने भीड़ को हटाने के लिए आंसू गैस के गोले छोड़ दिए। अधिकारियों के अनुसार, गोलीबारी की घटना इंफाल ईस्ट और कांगपोकपी जिलों की सीमा के पास खोंगबाल सुनुरोक हत्यक इलाके में हुई। यह स्थान इंफाल ईस्ट के नोंगशुम गांव से कुछ ही दूरी पर है। बताया गया कि सोमवार सुबह करीब सात बजे 16 लोग लकड़ी लेने पहाड़ियों की ओर गए थे। तभी संदिग्ध उगवादियों ने उन पर घात लगाकर हमला कर दिया। इस हमले में तीन लोगों की मौत हो गई, जबकि चार अन्य घायल हुए हैं। अधिकारियों ने बताया कि तीन लोग अब भी लापता हैं। मृतकों की पहचान अरुबाम रोनिल (35), लैरेनलकपम इनाओबी (51) और क्षेत्रियामुम सुशील (32) के रूप में हुई है। घायलों में क्ष देवन की हालत गंभीर बताई गई है। घटना के बाद इलाके में तनाव बढ़ गया और सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई।

दिल्ली हाईकोर्ट ने दुष्कर्म पीड़िता गर्भवती नाबालिग को दी गर्भपात की अनुमति

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली हाईकोर्ट ने 16 वर्षीय दुष्कर्म पीड़िता को 31 साहब की गर्भावस्था समाप्त करने की अनुमति दे दी है। अदालत ने कहा कि एक नाबालिग से बच्चे को जन्म देने और उसकी परिवारिश की जिम्मेदारी उठाने की अपेक्षा करना कही से उचित नहीं होगा। दिल्ली हाईकोर्ट ने साफ़ किया कि योन हिंसा की शिकार नाबालिग की गर्भावस्था समाप्त करने का मामला केवल उसके व्यक्तिगत अधिकारों से जुड़ा नहीं है, बल्कि यह उसके मानवाधिकार, गरिमा और सम्मानजनक जीवन से भी जुड़ा है। दिल्ली की अदालत ने कहा कि पीड़िता को गर्भावस्था जारी रखने के लिए मजबूर करना उसके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ उसके भविष्य को प्रभावित कर सकता है। मेडिकल टर्मिनेशन ऑफ़ प्रेग्नेंसी (एमटीपी) कानून के तहत सामान्य परिस्थितियों में 20 साहब तक और कुछ विशेष श्रेणियों, जिसमें दुष्कर्म पीड़िताएं शामिल हैं, में 24 साहब तक गर्भपात की अनुमति का प्रावधान है। हालांकि, इस मामले में गर्भावस्था 31 साहब की होने के बावजूद अदालत ने विशेष परिस्थितियों को ध्यान में रखकर अनुमति दी। पीड़िता फिलहाल लेडी हाईंग मेडिकल कालेज एवं अस्पताल में भर्ती है। हाईकोर्ट ने डॉक्टरों को निर्देश दिया कि गर्भावस्था समाप्त करने की प्रक्रिया के दौरान भ्रूण के ऊतकों को सुरक्षित रखा जाए, ताकि संबंधित आपराधिक मामले में जरूरत पड़ने पर डीएनए जांच हो सके। इससे मामले की जांच और न्यायिक प्रक्रिया में मदद मिल सकती है। अदालत ने निर्देश दिया कि यदि चिकित्सकीय प्रक्रिया के दौरान बच्चा जीवित पैदा होता है, तब अस्पताल प्रशासन उसकी हरसंभव चिकित्सा सहायता सुनिश्चित करे। इस स्थिति में उपचार का पूरा खर्च राज्य सरकार वहन करेगी। कोर्ट ने अस्पताल के मेडिकल सुपरिटेंडेंट को आवश्यक चिकित्सा व्यवस्था करने की जिम्मेदारी भी सौंपी।

रावण दहन पर विवाद गहराया : आयोजकों को मिला लीगल नोटिस

उज्जैन (एजेंसी)। उज्जैन में रावण दहन की परंपरा को लेकर नया विवाद खड़ा हुआ है। अखिल भारतीय युवा ब्राह्मण समाज ने शहर में रावण दहन करने वाली चार आयोजक समितियों को कानूनी नोटिस भेजकर 7 दिन के भीतर शास्त्र-सम्मत प्रमाण मांगे हैं। समाज ने पूछा है कि किस धर्मशास्त्र या पुराण में आश्विन शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को रावण वध का उल्लेख मिलता है। नोटिस में स्पष्टीकरण न देने की स्थिति में वैधानिक कार्रवाई और संबंधित खर्चों के वहन की चेतावनी दी गई है। इस बीच, ब्राह्मण समाज ने शहर भर में रावण दहन के विरोध में पोस्टर भी लगाए हैं, जिससे यह मुद्दा और गरमा गया है। अखिल भारतीय युवा ब्राह्मण समाज के महेश पुजारी ने परंपरा को ब्राह्मणों का अपमान बताया। उन्होंने तर्क दिया कि रावण ने ऐसा कोई कृत्य नहीं किया जिसके लिए रावण को प्रतिबंध जलाया जाए और आयोजकों से सवाल किया कि करोड़ों सानातनी बताएं कि किस शास्त्र में रावण दहन का उल्लेख है। पुजारी ने रावण दहन की आड़ में होने वाले ब्राह्मणों के अपमान को रोकने की बात कही। उन्होंने याद दिलाया कि पूर्व में अंग्रेजों और मुस्लिमों ने भी ब्राह्मणों का अपमान किया था। अखिल भारतीय युवा ब्राह्मण समाज ने देश की सभी संस्थाओं से रावण दहन की इस प्रथा को बंद करने का आग्रह किया है।

राहुल गांधी भारत में नहीं हैं, नवरात्रि में वह विदेश में क्या कर रहे हैं? प्रदीप भंडारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। बीजेपी प्रवक्ता प्रदीप भंडारी ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी की उन खबरों का जिक्र किया, जिनके मुताबिक लोकसभा में विपक्ष के नेता छुट्टियों पर विदेश गए हैं। भंडारी ने नवरात्रि के दौरान उनकी अनुपस्थिति पर सवाल उठाए और उन पर काम करने के बजाय छुट्टियों में ज्यादा समय बिताने का आरोप लगाया। भंडारी ने पोस्टर में लिखा- राहुल गांधी फिर से वही कर रहे हैं जिसमें वे माहिर हैं- ब्रेक लेना और छुट्टियों का आनंद लेना! उन्होंने दावा किया कि राहुल गांधी भारत में नहीं हैं और पूछा कि नवरात्रि के दौरान कांग्रेस नेता विदेश में क्या कर रहे हैं।

स्टारलिंग विवाद ~ कांग्रेस नेता शशि थरूर ने कहा, सभी कंपनियों के लिए समान प्रक्रिया

राहुल गांधी ने किया था मस्क के बयान का समर्थन

नई दिल्ली, एजेंसी। कांग्रेस सांसद और वरिष्ठ नेता शशि थरूर ने भारत के सैटेलाइट इंटरनेट बाजार में अमेरिकी कारोबारी एलन मस्क की कंपनी स्टारलिंग के प्रवेश को लेकर कहा है कि सभी इच्छुक कंपनियों को समान प्रक्रिया से गुजरने का मौका मिलना चाहिए। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार के अनुसार, लाइसेंस देने की प्रक्रिया में सभी कंपनियों को समान देरी का सामना करना पड़ रहा है। इसके बाद किसी एक कंपनी को प्राथमिकता देने या किसी अन्य को पीछे रखने का निष्कर्ष निकालना उचित नहीं होगा। कांग्रेस नेता थरूर ने कहा कि केंद्र सरकार ने इस मामले में अपनी स्थिति स्पष्ट की है। यदि सरकार के बयान को सही माना जाए, तब ना स्पेसएक्स के सीईओ मस्क को नुकसान पहुंच रहा है, और न ही रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन मुकेश अंबानी को कोई विशेष लाभ मिल रहा है। उन्होंने कहा कि फिलहाल प्रक्रिया पूरी होने का इंतजार करना चाहिए।



कांग्रेस नेता थरूर ने बताया कि भारत में सैटेलाइट इंटरनेट सेवाओं का भविष्य कई महत्वपूर्ण पहलुओं पर निर्भर करेगा। इसमें तकनीक, सुरक्षा संबंधी चिंताएं, अपलिंकिंग की व्यवस्था और सेवा की लागत शामिल हैं।

उनके मुताबिक, अंततः उपभोक्ता ही तय करेगा कि उन्हें कौन-सी सेवा लेनी है और उसके लिए कितनी कीमत चुकाना उचित है। उन्होंने उदाहरण देकर कहा कि यदि कोई कंपनी दूसरी कंपनी की तुलना में दस गुना

अधिक कीमत पर सेवा उपलब्ध कराती है, तब ग्राहक को तय करना होगा कि अतिरिक्त कीमत के बदले मिलने वाली सुविधा उसके लिए कितनी उपयोगी है। कांग्रेस नेता थरूर ने स्पष्ट किया कि वह अपने मौजूदा इंटरनेट कनेक्शन से संतुष्ट हैं और व्यक्तिगत रूप से स्टारलिंग सेवा लेने की योजना नहीं बना रहे हैं। हालांकि, उन्होंने कहा कि यदि कुछ उपभोक्ता इस तकनीक का लाभ उठाना चाहते हैं, तब उन्हें यह अवसर मिलना चाहिए। इसके पहले, लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने स्टारलिंग को भारत में लाइसेंस मिलने में हो रही देरी का मुद्दा उठाया था। इसके बाद मस्क ने प्रतिक्रिया देकर स्थिति को चिंताजनक बताया था। स्टारलिंग भारत में सैटेलाइट आधारित इंटरनेट सेवा शुरू करने की कोशिश में है। इस बीच, थरूर के बयान ने बाजार में प्रतिस्पर्धा, निष्पक्ष नियामकीय प्रक्रिया और उपभोक्ताओं की पसंद के महत्व को फिर से चर्चा में ला दिया है।

सपा के झांसे में न आयेँ मुसलमान: ओवैसी

रामपुर, एजेंसी। एआईएमआईएम अध्यक्ष और सांसद असदुद्दीन ओवैसी ने मुस्लिम मतदाताओं से समाजवादी पार्टी के झांसे में नहीं आने का आह्वान किया है। उन्होंने कहा कि अब नेहरू, गांधी या यादव को अपना नेता नहीं बनाएँगे अपना मुस्कबिल मुसलमान खुद तय करेगा। उन्होंने शेर पदते हुए कहा कि, “कुछ देर की खामोशी है, फिर शोर आपणा, तुम्हारा वक्त आया है अखिलेश बाबा हमारा दौर आपणा।” एआईएमआईएम अध्यक्ष और सांसद असदुद्दीन ओवैसी ने जिले के टांडा में एक जनसभा को सम्बोधित करते हुए मुस्लिम मतदाताओं को एकजुट रहने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि अखिलेश यादव जी 2014, 2017, 2019, 2022 में मुसलमान ने किसें वोट किया। इसके बाद परिणाम क्या रहा। उन्होंने कहा कि रामपुर जिले में मुस्लिमों की संख्या अधिक है तभी देश के पहले चुनाव में 1952 में नेहरू जी ने मौलाना अबुल कलाम आजाद को यहां भेजा और पहले सांसद बने। उन्होंने कहा कि रामपुर शहर में काम हुआ, लेकिन देहात में काम नहीं हुआ है। उन्होंने आजम खान पर हुई कार्रवाई को गलत बताया और उनको राहत मिलने की दुआ की। ओवैसी ने कहा कि अब मुस्लिमों को एकजुट होना होगा, पीढ़ी दर पीढ़ी बीड़ी बनाना नहीं, स्कूल जाने पर जोर देना होगा। साईं ओवैसी की पार्टी को बी टीम बताते हैं, जबकि राज्यसभा में अपने चर्चा को भेजते हैं। गुजरात के नथानी कौन हैं, ये सभी जानते हैं। रामपुर के लोगों को अपना मुस्कबिल बनाना है तो मजलिस के साथ आना होगा। कहा कि रामपुर ने देश की आजादी में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अब देश को बदलने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि रामपुर और मुगदाबाद में मुस्लिमों और दलितों की संख्या बहुत है। यहां दवाई की गोली तो नहीं मिलती लेकिन बंदूक की गोली बड़ी आसानी से मिल जाती है। इसके लिए हमें लड़ना होगा। प्रधानमंत्री का नाम लेकर ओवैसी ने कहा कि देश में युवाओं के पास रोजगार नहीं है, तनख्वाह बढ़ नहीं रही है। ऐसे में हालात नेपाल, श्रीलंका और फ्रांस जैसे ना हो जाएं। इसके लिए विशेष ध्यान देने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि हम बाबा साहब के संविधान पर यकीन रखते हैं। उसके तहत ही अपनी बात मजबूती से रखेंगे। उन्होंने अप मुख्यमंत्री पर टिप्पणी करते हुए कहा बाबा आप 80-20 की बात करते हो, रामपुर में विकास का कोई काम ही नहीं हुआ है।

लखनऊ, एजेंसी। बसपा प्रमुख मायावती ने अपने भतीजे आकाश आनंद पर कई यू-टर्न के बाद अब बड़ा राजनीतिक दांव लगाया है। उन्हें बहुजन समाज पार्टी का राष्ट्रीय संयोजक बनाते हुए उत्तर प्रदेश, पंजाब और उत्तराखंड तक में जनसभाओं की विस्तृत सूची जारी की गई है। बसपा इन दिनों कि रामपुर ने देश की आजादी में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अब देश को बदलने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि रामपुर और मुगदाबाद में मुस्लिमों और दलितों की संख्या बहुत है। यहां दवाई की गोली तो नहीं मिलती लेकिन बंदूक की गोली बड़ी आसानी से मिल जाती है। इसके लिए हमें लड़ना होगा। प्रधानमंत्री का नाम लेकर ओवैसी ने कहा कि देश में युवाओं के पास रोजगार नहीं है, तनख्वाह बढ़ नहीं रही है। ऐसे में हालात नेपाल, श्रीलंका और फ्रांस जैसे ना हो जाएं। इसके लिए विशेष ध्यान देने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि हम बाबा साहब के संविधान पर यकीन रखते हैं। उसके तहत ही अपनी बात मजबूती से रखेंगे। उन्होंने अप मुख्यमंत्री पर टिप्पणी करते हुए कहा बाबा आप 80-20 की बात करते हो, रामपुर में विकास का कोई काम ही नहीं हुआ है।

फिर बुआ ने लगाया भतीजे आकाश पर बड़ा दांव, बना दिया संयोजक

बसपा से जोड़ना है। जिस तरह आकाश आनंद को आगे किया गया है, उससे साफ है कि पार्टी अपने कोर वोट बैंक में युवाओं को छिटकने नहीं देना चाहती। संगठन का एक बड़ा तबका भी आकाश को पार्टी से बाहर रखने के पक्ष में नहीं था, और कई वरिष्ठ नेता समय-समय पर उन्हें मौका दिए जाने की पैरवी करते रहे थे। बसपा के परंपरागत वोट बैंक को युवा नेता चंद्रशेखर आजाद की आजाद समाज पार्टी से बड़ा खतरा महसूस हो रहा है। चंद्रशेखर खेमे में युवाओं की बढ़ती भागीदारी ने बसपा



संगठन के भीतर बेचैनी पैदा की है। मायावती की पकड़ जहां बहुजन समाज की पुरानी पीढ़ी में अब भी है, वहीं नौजवान कई मुद्दों को लेकर अलग-अलग खेमों में बंट सकते हैं। विधानसभा चुनाव की तैयारियों की पिछली बैठकों में बसपा संगठन ने इस खतरे की गहन समीक्षा की थी। हाल ही में मायावती ने आकाश आनंद को परिपक्व बताते हुए उनके काम की सराहना की। उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा कि अपने ससुर अशोक सिद्धार्थ के राजनीति

से संन्यास लेने के बाद आकाश आनंद बसपा के राष्ट्रीय संयोजक के रूप में काफी सुझबूझ व परिपक्वता दिखा रहे हैं। उन्होंने आकाश की जनसभाओं की तारीखें भी साझा कीं। आकाश 28 अक्टूबर को बुलंदशहर, 2 नवंबर को सहारनपुर, 20 नवंबर को अयोध्या, 22 नवंबर को आगरा और 29 नवंबर को कानपुर में जनसभाएं संबोधित करेंगे। इसके अतिरिक्त, वह 26 नवंबर को पंजाब में संविधान दिवस समारोह और 6 दिसंबर को हरिद्वार (उत्तराखंड) में डॉ. भीमराव अंबेडकर की पुण्यतिथि पर आयोजित जनसभा को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित करेंगे। मायावती ने यह भी स्पष्ट किया कि आकाश के ससुर अशोक सिद्धार्थ ही बीते दिनों हुए अग्रिय घटनाक्रमों के लिए जिम्मेदार थे और उनकी अब पार्टी में ख़ासी वापसी नहीं होगी। उन्होंने बताया कि उनके छोटे भतीजे आनंद आनंद लंदन से वकालत की पढ़ाई पूरी कर चुके हैं और दिल्ली स्थित केंद्रीय कार्यालय में चुनाव व संगठन से जुड़े कार्यों में सहयोग करेंगे।

किरण बेदी की दूसरी इच्छा: विरोध-प्रदर्शनों में पुलिस के लिए बाँडीकैम और चरणबद्ध व्यवस्था

नई दिल्ली, एजेंसी। पूर्व आईपीएस अधिकारी किरण बेदी, जिनकी जंतर-मंतर से विरोध प्रदर्शनों को हटाने की मांग पूरी हो चुकी है, अब कानून-व्यवस्था से जुड़े प्रदर्शनों को संभालने के लिए पुलिस को नए उपाय सुझा रही हैं। उन्होंने पुलिसकर्मियों को बेबुनियाद आरोपों से बचाने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाने की मांग की है। पूर्व आईपीएस अधिकारी बेदी का सुझाव है कि पुरुष पुलिसकर्मियों के साथ काम करने और उनका नेतृत्व करने के लिए बाँडी कैम से लैस महिला पुलिसकर्मियों को तैनात करे। साथ ही, सभी प्रदर्शनों की सीसीटीवी या अन्य कैमरों के माध्यम से रिकॉर्डिंग होनी चाहिए। उन्होंने फेस रिकॉग्निशन टेक्नोलॉजी के इस्तेमाल पर भी जोर दिया, जिससे अधिकारियों के पास समीक्षा के लिए दोस सबूत मौजूद रहे और गलत आरोप रक सके। उन्होंने सरकार से उपकरणों की



खरीद, प्रशिक्षण और तैनाती के साथ-साथ फुटेज की सुरक्षित समीक्षा के लिए अभी से लैस महिला पुलिसकर्मियों का आग्रह किया। इसके पहले, पूर्व आईपीएस अधिकारी बेदी ने जंतर-मंतर को विरोध प्रदर्शनों के लिए अनुपयुक्त बताकर इस शहर के संवेदनशील स्थानों और व्यावसायिक क्षेत्र के करीब होने का हवाला दिया था। उनकी इस मांग पर गृह मंत्रालय ने अब रामलीला मैदान और अन्य स्थानों को इसके लिए चिह्नित किया है। पूर्व

आईपीएस अधिकारी बेदी ने कहा कि रामलीला मैदान जैसी नई जगहों के लिए एक स्पष्ट सुरक्षा और संचालन योजना होनी चाहिए, जिस प्रदर्शन को अनुमति देते समय स्पष्ट रूप से बताया जाए। उन्होंने विरोध-प्रदर्शनों से निपटने के मौजूदा ब्रिटिश सिस्टम की आलोचना कर चरणबद्ध रणनीति का प्रस्ताव रखा। इसके तहत, पहली पंक्ति में लाठीचार्ज सिविल डिफेंस के युवा पुरुष और महिला सदस्य होने चाहिए। यदि भीड़ बेकाबू होती है, तब दूसरी पंक्ति में हेडगियर और बाँडी आर्मर से लैस महिला पुलिसकर्मी होंगी, जिनके पास लाठियां नहीं होंगी। केवल अत्यधिक उग्र स्थिति में ही अंतिम उपाय के तौर पर सशस्त्र पुलिस बल का उपयोग किया जाना चाहिए, जो हालात देखकर बल प्रयोग करेगा। पूर्व आईपीएस अधिकारी का मानना है कि भविष्य की चुनौतियों से निपटने के लिए अच्छी तैयारी ही सबसे अच्छा बचाव है।

केजरीवाल का केंद्र पर हमला, देश के सबसे बड़े गैंगस्टर को अपना ‘दामाद’ बनाया

नई दिल्ली, एजेंसी। आम आदमी पार्टी (आप) के राष्ट्रीय संयोजक और पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने बॉलीवुड अभिनेता टाइगर श्रॉफ से जुड़ी गोलीबारी की घटना को लेकर केंद्र पर निशाना साधा है। उन्होंने देश में अपराध और कानून-व्यवस्था की स्थिति पर सवाल उठाकर गैंगस्टर लॉरेंस बिस्नोई का जिक्र किया। पोस्ट में केजरीवाल ने आरोप लगाया कि देश के अपराधियों के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई करने में विफल रही है। उन्होंने राजनीतिक कटाक्ष कर कहा कि केंद्र सरकार ने देश के सबसे बड़े गैंगस्टर को अपना ‘दामाद’ बना रखा है। केजरीवाल ने कहा कि केंद्र सरकार अपने राज्यों में कानून-व्यवस्था



संभालने में नाकाम है और गैंगस्टर को भारत ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी आपराधिक गतिविधियां चलाने की सुविधाएं मिलने का आरोप लगा दिया। उन्होंने पंजाब की राजनीति का जिक्र कर कहा कि राज्य के लोगों को मतदान करते समय कानून-व्यवस्था के मुद्दे पर विचार करना चाहिए। हालांकि, गैंगस्टर को सरकारी संरक्षण मिलने संबंधी उनके आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि नहीं हुई है। विवाद अभिनेता टाइगर श्रॉफ से जुड़ी

गोलीबारी की घटना के बाद सामने आया है। पुलिस के अनुसार, अभिनेता जब अपनी गाड़ी से मैदान से बाहर निकल रहे थे, तभी भीड़ के बीच से उनकी कार पर तीन से चार राउंड गोलायांचलाई गई। घटना में टाइगर श्रॉफ सुरक्षित बच गए, लेकिन दो लोग घायल हो गए। इनमें उनके ड्राइवर फिरोज़ भी शामिल हैं, जिनके बाएं हाथ में गोली लगी। मुंबई पुलिस ने मामले की जांच के लिए 15 टीमें गठित की हैं। पुलिस गोलीबारी में शामिल लोगों की पहचान करने, हमले के पीछे की वजह का पता लगाने और घटनास्थल से मिले साक्ष्यों की जांच में जुटी है। फिलहाल, जांच के निष्कर्ष सामने आने का इंतजार है।

काँकरोच आंदोलन बनेगी यूपी विधानसभा चुनाव में भाजपा के लिए नई चुनौती?

नई दिल्ली, एजेंसी। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव 2027 से पहले, दिल्ली में काँकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के नेतृत्व में चल रहे आंदोलन ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के लिए नई चुनौतियां खड़ी की हैं। यह आंदोलन अब केवल नीट परीक्षा में कथित अनियमितताओं के विरोध तक सीमित नहीं रहा, बल्कि युवाओं के असंतोष, लोकतांत्रिक अधिकारों और मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) जैसे मुद्दों से भी जुड़ गया है। हालांकि, इसका आगामी चुनावों पर कितना असर पड़ेगा, यह देखना बाकी है। हाल ही में दिल्ली में हुए प्रदर्शनों के दौरान पुलिस की सख्ती, मेट्रो स्टेशनों का बंद होना

और मोबाइल इंटरनेट सेवाओं का निलंबन चर्चा में रहा। 10 और 16 अक्टूबर को बड़ी संख्या में प्रदर्शनकारियों और सीजेपी संस्थापक अभिजीत दीपके को हिरासत में लिया। विशेषज्ञों का मानना है कि प्रशासन भले ही सड़कों पर भीड़ नियंत्रित कर ले, लेकिन सख्ती आंदोलन से जुड़े राजनीतिक संदेश को रोकना आसान नहीं होता। कई बार ऐसी सख्ती आंदोलन को दबाने के बजाय उस आंदोलन को और अधिक चर्चा दिला देती है, जिससे भाजपा के सामने व्यापक असंतोष बढ़ने का खतरा है। चुनावी पारदर्शिता से जुड़े सवालों के बीच मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) को लेकर

विवाद जारी है। देशभर में करीब 13 करोड़ नाम प्रारूप सूचियों से हटाने का दावा किया, जिस पर आलोचकों ने कुछ समुदायों पर असमान प्रभाव पड़ने का आशंका जाहिर की है। 2024 के लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश में भाजपा को बड़ा झटका लगा था, जब उसकी सीटें 62 से घटकर 33 रह गईं। विपक्षी समाजवादी पार्टी और कांग्रेस ने मिलकर 43 सीटें जीतीं, जो भाजपा के लिए एक स्पष्ट चेतावनी थी। इस झटके के बाद, भाजपा ने संगठनात्मक स्तर पर बृ्थ प्रबंधन मजबूत करने, जातिगत समीकरणों को साधने और कल्याणकारी योजनाओं पर जोर दिया है। महिलाओं को आर्थिक सहायता देने जैसी योजनाएं 2027 के

लिए भाजपा की रणनीति का अहम हिस्सा बन सकती हैं। हालांकि, राजनीतिक विश्लेषकों ने उत्तर प्रदेश के लिए तीन संभावित परिदृश्य बताए हैं, भाजपा की वापसी, 2024 जैसा विपक्षी गठबंधन का मजबूत प्रदर्शन, या बढ़ती भाजपा विरोधी भावना से सत्ता परिवर्तन है। 2024 के लोकसभा नतीजों को विधानसभा सीटों के आधार पर इंडिया गठबंधन को भाजपा-नेतृत्व वाले एनडीए से ज्यादा सीटों पर बढ़त मिली थी, लेकिन विधानसभा और लोकसभा चुनावों के मुद्दे भिन्न हो सकते हैं। अंततः, उत्तर प्रदेश में भाजपा की चुनावी संभावनाएं केवल काँकरोच आंदोलन से तय नहीं होंगी, बल्कि



जातीय समीकरण, बेरोजगारी, महंगाई और विपक्ष की एकजुटता जैसे कारक भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। हालांकि, काँकरोच आंदोलन का युवाओं के असंतोष और लोकतांत्रिक

अधिकारों से जुड़े मुद्दों का विस्तार भाजपा के लिए एक महत्वपूर्ण चेतावनी का संकेत है, जिस पर उसे गंभीरता से विचार करना होगा।

प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में शक्ति और सामर्थ्य से सार्थक हो रहा है भारत



डॉ. मोहन यादव

इस विजयादशमी पर शस्त्र-पूजन के साथ अपने संकल्पों को भी नई धार दें। भगवान श्रीराम की मर्यादा, मां दुर्गा की शक्ति और वीर सैनिकों का साहस हमारा पथ प्रकाशित करे। हम सत्य के पक्ष में खड़े हों, न्याय के लिए कार्य करें और अपने कर्तव्य से राष्ट्र को सशक्त बनाएं।

संपादकीय

बच्चे और इंटरनेट

ऐसे दौर में जब आस्ट्रेलिया-फ्रांस व अन्य विकसित देशों में सोशल मीडिया तक बच्चों की पहुंच सीमित करने के कानून बने हैं, सुप्रिम कोर्ट ने कहा है कि बच्चों की इंटरनेट तक पहुंच उनका मौलिक अधिकार है। इस पर प्रतिबंध लगाना अनुचित है। कोर्ट ने माना कि इंटरनेट तक पहुंच और इस्तेमाल करने का अधिकार, संविधान के अनुच्छेद 21 के साथ-साथ अनुच्छेद 19(1) (ए) के तहत निर्धारित ह्वाक 2 और अभिव्यक्ति की आजादी ङ्ग में ही निहित है। दरअसल, न्यायमूर्ति जे.बी. पारदीवाला और न्यायमूर्ति केवी चंद्रन की पीठ इंटरनेट के जरिये बच्चों के शोषण और दुर्व्यवहार से जुड़ी सामग्री का पता लगाने और उसे हटाने के उपायों पर विमर्श कर रही थी। इसी बीच कई देशों द्वारा एक निर्धारित उम्र तक के बच्चों की सोशल मीडिया तक पहुंच सीमित करने का मामला सामने आया। भारत में भी इस तरह के प्रतिबंध लगाने की मांग की जा रही है। अदालत का मानना था कि हम बच्चों से जुड़ी ऐसी चिंताओं को व्यंकीार करते हैं, लेकिन इंटरनेट पर प्रतिबंध इसका न्यायोचित विकल्प नहीं है। शीर्ष अदालत ने माना कि इस माध्यम से बच्चों को दूर रखकर हम उनकी सुरक्षा सुनिश्चित नहीं कर सकते। अदालत का तर्क था कि बच्चों की आजादी और सुरक्षा एक दूसरे के खिलाफ नहीं है, बल्कि उन्हें दोनों ही चीजें मिलनी चाहिए। अदालत का मानना था कि नई पीढ़ी के बच्चों के लिये इंटरनेट सीखने का माध्यम भी है। दूरदराज के इलाकों में जानकारी पाने का एकमात्र जरिया होता है।

वहीं दूसरी ओर सुप्रिम कोर्ट ने इस बात का गंभीरता से संज्ञान लिया कि देश में नाबालिगों से जुड़ी अश्लील सामग्री रोकने में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म लापरवाही दिखा रहे हैं। अदालत का मानना था कि सभी हितधारक यह सुनिश्चित करें कि बच्चों को हानि पहुंचाने वाली कोई भी सामग्री प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से उपलब्ध न हो सके। यह सामग्री न अपलोड की जाए और न ही उस तरह के प्रस्तावना दिया जाए। कोर्ट ने इस बात को लेकर भी नाराजगी जतायी कि मध्यस्थों व सोशल मीडिया मंचों ने वर्ष 2024 में जारी किए गए कोर्ट के निर्देशों का ईमानदारी से पालन नहीं किया। साथ ही पीठ का मानना था कि आज इंटरनेट शिक्षा, सूचना और सामाजिक भागीदारी का एक सशक्त माध्यम बना है। ऐसे में यदि प्रतिबंध लगाए जाते हैं तो वे निष्प्राभावी होंगे, बल्कि नुकसान पहुंचाने वाले भी हो सकते हैं। इसका नुकसान यह हो सकता है कि बच्चे ऐसी ऑनलाइन जगहों को सर्च करना शुरू कर सकते हैं, जो नियम-कानून कम होने की वजह से ज्यादा घातक हो सकती हैं। यह भी स्पष्ट किया गया कि उसकी टिप्पणी का यह अर्थ नहीं निकाला जाए कि उम्र के आधार पर कोई पाबंदी नहीं होनी चाहिए। पीठ के मुताबिक-हमारी धारणा है कि ऑनलाइन सुरक्षा के लिये कुछ आत्मा को बात नहीं सुनता है। अभिभावकों के पास उपलब्ध सामग्री की निगरानी की भी व्यवस्था होनी चाहिए। इसके अंतर्गत ऐसी व्यवस्था हो सकती है, जिन्हें माता-पिता के मार्गदर्शन,सहमति और निगरानी में बच्चे सोशल मीडिया मंचों का उपयोग कर सकें।

चिंतन-मनन

जीवन का अर्थ बताती है अर्थ

जीवन भर व्यक्ति इसी सोच में उलझा रहता है कि उसका परिवार है, बीबी बच्चे हैं। इनके लिए धन जुटाने और सुख-सुविधाओं के इंतजाम में हर वह काम करने के लिए तैयार रहता है जिससे अधिक से अधिक धन और वैभव अर्जित कर सके। अपने स्वार्थ के लिए व्यक्ति दूसरों को नुकसान पहुंचाने के लिए भी तैयार रहता है। जबकि हर व्यक्ति के शरीर में आत्मा रूप में बसा ईश्वर गलत तरीके से, दूसरों को अहित पहुंचाकर लाभ पाने के लिए मना करता है। लेकिन जब व्यक्ति आत्मा की बात नहीं सुनता है तो आत्मा मौन धारण कर लेती है। आत्मा को उस दिन का इंतजार रहता है जब व्यक्ति अर्थों पर पहुंचता है। इस समय व्यक्ति को जीवन का अर्थ और आत्मा की कही बातें याद आती हैं। लेकिन इस समय पश्चाताप के अलावा कुछ और नहीं बचता है। सब कुछ मिट्टी में मिल चुका होता है। आपने मृत व्यक्ति को बांस की फड़ियों पर लेकर जाते हुए कभी न कभी जरूर देखा होगा। बांस की फड़ियों पर जिस पर शव को लिटाया जाता है इसे अर्थों कहते हैं। अर्थों को उठाने के लिए चार कंधों की जरूरत पड़ती है। जब व्यक्ति की अर्थों उठायी जाती है उस समय आत्मा मृत व्यक्ति से कहती है देखो, तुम्हारी यही ओकात है। तुम्हें खुद सहारे की जरूरत है, तुम झूठा अहंकार करते रहे कि तुम लोगों को आश्रय दे रहे हो। जिन लोगों के लिए तुम दिन रात धन-वैभव जुटाने में लगे रहे। आज वह संगी साथी परिवार तुम्हें विराने में ले जाकर अर्पित कर देगा। जीवन का मात्र यही अर्थ है। इसलिए अर्थों को जीवन का अर्थ बताने वाला कहा गया है। अर्थों ले जाते समय लोग जोर-जोर से नारे लगाते हैं राम नाम सत्य है, सब की यही गत्य है। नारे लगाने वाले लोग मृत व्यक्ति को न कह है कि जो व्यक्ति जरूरत के समय व्यक्ति से नजर हट लेता है वह नीच योनियों में जन्म लेता है। जरूरत के समय दूसरों की सहायता करने वाला व्यक्ति कई पापों से मुक्त हो जाता है। इसलिए व्यक्ति को परमार्थों होना चाहिए। मनुष्य का जन्म ही इस उद्देश्य के लिए हुआ। जो व्यक्ति इस अर्थ को नहीं समझता उसे अर्थों पर जाकर ही जीवन का अर्थ ज्ञात होता है।

विजयादशमी सत्य की शक्ति और शक्ति की सार्थकता का महापर्व है। यह भारतीय चेतना का वह प्रकाश है, जो हमें विश्वास दिलाता है कि अन्याय कितना भी प्रबल हो, प्रतिकार का संकल्प उससे बड़ा होता है। असत्य का वैभव क्षणिक है, सत्य का सामर्थ्य शाश्वत। भगवान श्रीराम की विजय इसी विश्वास की प्रतिष्ठा है। यह पर्व हमें सिखाता है कि सत्य के प्रति आस्था के साथ उसकी रक्षा का साहस भी आवश्यक है। न्याय की कामना तभी फलित होती है, जब समाज उसके लिए खड़ा होने का संकल्प लेता है।

भगवान श्रीराम के देश में शक्ति की आराधना का उद्देश्य सदैव लोकमंगल रहा है। श्रीराम का धनुष पींडितों के लिए आश्वासन और अत्याचारियों के लिए चेतावनी है। उनका पराक्रम मर्यादा से प्रेरित है और उनका प्रत्येक संकल्प जनकल्याण के लिए समर्पित है। उन्होंने वनवास के कठिन मार्ग पर समाज के विभिन्न वर्गों को साथ लेकर यह सिद्ध किया कि विश्वास, संगठन और सामूहिक पुरुषार्थ से बड़ी से बड़ी चुनौती पर विजय प्राप्त की जा सकती है। यही हमारी सांस्कृतिक चेतना का आधार और राष्ट्रनिर्माण का मार्ग है।

विजयादशमी पर शस्त्र-पूजन इसी चेतना की अभिव्यक्ति है। शस्त्रों का पूजन करते हुए हम शक्ति के विवेकपूर्ण उपयोग और उसके साथ जुड़े उत्तरदायित्व को स्वीकार करते हैं। हम संकल्प लेते हैं कि हमारा बल निर्बल की रक्षा करें, हमारा साहस अन्याय के विरुद्ध खड़ा हो और हमारा पराक्रम मानवता के कल्याण में समर्पित रहे। शस्त्र धारण करने वाले हाथों में संयम और निर्णय लेने वाले मन में संवेदना हो यही इस परंपरा का संदेश है। मर्यादा से अनुशासित शक्ति ही समाज का विश्वास बनती है। आज यही भाव भारत के राष्ट्रीय आत्मविश्वास में दिखाई देता है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में राष्ट्र की सुरक्षा के प्रति दृढ़ संकल्प और भारतीय सशस्त्र बलों का अदम्य पराक्रम देशवासियों को गर्व से भरता है। भारत शांति, सहयोग और सह-अस्तित्व में विश्वास रखता है।



अपनी संप्रभुता, स्वाभिमान और नागरिकों की सुरक्षा के लिए आवश्यक निर्णय लेने का उसका संकल्प भी उतना ही अटल है। हमारी शांतिप्रियता को हमारे सामर्थ्य का संबल प्राप्त है। सजग और समर्थ भारत विश्वशांति के प्रति अपने दायित्व को भी दृढ़ता से निभा सकता है। ऑपरेशन सिंदूर में भारतीय सशस्त्र बलों ने आतंकवादी ढांचों के विरुद्ध सटीक कार्रवाई कर साहस, कौशल और सैन्य दक्षता का परिचय दिया। हमारे वीर जवानों ने अपने पराक्रम से राष्ट्र के सुरक्षा संकल्प को साकार किया। यह

शौर्य प्रत्येक भारतीय के लिए गौरव और विश्वास का विषय है। विजयादशमी पर हम अपने सैनिकों को नमन करते हुए उस कर्तव्यनिष्ठा से प्रेरणा लें, जिसके लिए राष्ट्र की रक्षा सर्वोपरि है। देश का सम्मान सुरक्षित रखने वाले इन प्रहरियों के प्रति हमारी कृतज्ञता हमारे आचरण में भी दिखाई देनी चाहिए।

सीमा पर तैनात सैनिक का जीवन त्याग और तपस्या की जीवंत गाथा है। जब हम अपने परिवार के साथ पर्व मनाते हैं, तब वह अपने परिवार से दूर हमारी सुरक्षा में तैनात रहता

क्या कभी आत्मदैन्य से मुक्त हो सकेंगे हम?

खुद को आधा-अधूरा अंग्रेज साबित करने में जुट जाते थे। ऐसे में शेष समाज अपने श्रेष्ठ वर्ग का आचरण देख वैसा ही बनने का प्रयास करने लगा। देश में तमाम सर, रावबहादुर और साहेब बहादुर हमारे आदर्श बन गए। स्वामी विवेकानंद, लोकमान्य तिलक, महर्षि अरविन्द, महर्षि दयानंद, महात्मा गांधी, भारतेन्दु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद, बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय, रवीन्द्र नाथ टैगोर के बहुत तरह भारतबोध की प्रज्ञा ने हमें संभाला। वरना हमारी दस्तानों में न होती दास्तानों में। हमारी हस्ती मिटने से कोई रोक नहीं सकता था।

औसत भारतीय का आचरण अंग्रेजी शासनकाल में कैसा था, कहने की जरूरत नहीं है। हम कोहिनूर को छोड़कर कांच की ओर दौड़ रहे थे। अंग्रेजी भाषा और संस्कृति श्रेष्ठता की परिचायक बन गईं। जब तक अपना कोई व्यक्ति या कार्य पश्चिम में स्थापित न हो जाए, उसे हम श्रेष्ठ मानने को तैयार नहीं थे। अंग्रेजी शासन और उसके बाद के आजादी के साल भी आत्मगौरव के अभाव में गुजरे साल बनकर रह गए। सत्ता के आतंक और सत्ता से जुड़े रहने के आकर्षण से हमने 'अपने जीवन मूल्यों का सनातन सिद्ध राजमार्ग' छोड़कर 'अंग्रेजियत की पगडंडियों' पर चलना प्रारंभ कर दिया, जो हमारा देखा-पखा रास्ता नहीं था। जाहिर है इस मार्ग पर हम नेतृत्वकर्ता नहीं, अनुगामी ही बन सकते थे। हमारे एकत्व को चोटिल करने के सचेतन प्रयास प्रारंभ हुए। भारतीय शिक्षा पद्धति को अंग्रेजी राज में कैसे नष्ट किया गया, इसे धमिलाने की कोशिशों को सड़कर ही समझ में आएगा। 'स्व' के स्थान पर 'परकीय' विचारों की स्थापना के प्रयास खूब चले। हम एक 'राष्ट्र' नहीं हैं, बताया गया। अनेक स्थानीयताओं को राष्ट्रीयता के बरक्स स्थापित करने के अकादमिक प्रयास भी खूब चले, सफल भी हुए। कैसे और कितने विभाजन गढ़े जा सकते हैं, सारा जोर इसी

पर था। भारतीय ज्ञान परंपरा पर चल रहे लोगों के आत्मविश्वास को समाप्त कर इस पूरे विचार को ही पोंगाथर और पिछड़पन के रूप में आरोपित किया जाना फैशन बन गया। राजनीतिक परिवर्तन के कारण लंबे समय के बाद भारत फिर से खुद को खोज रहा है। अपनी जड़ों की तरफ वापसी करना चाहता है। जिसे 'विचारों की घर वापसी' कहकर संबोधित किया गया। जरूरी है कि भारत प्रेमी बौद्धिक वर्ग सत्य के सूर्य की स्थापना करने के लिए अध्यवसाय में जुट जाए। सिर्फ भावनात्मक प्रवचनों, कार्यक्रमों से आगे बढ़कर भ्रमों के निवारण का जतन करे। ऐसे कुशल बौद्धिक योद्धा ही अपनी ज्ञान परंपरा को सामने लाकर तथ्य, प्रमाणों के साथ उनकी युगानुकूल व्याख्या करेंगे। इसके लिए हमें लोकसंग्रही और विनम्र बनना पहली शर्त है। परंपरा,जीवन पद्धति और परिवार पर छाप संकेतों के बीच ये प्रयत्न ही हमें आत्मशक्ति देंगे। दुनिया भर में चल रहे सभ्यतागत संघर्ष के बीच भारत को अपनी वृहत्तर भूमिका का निर्वहन करना है, क्योंकि हमारे पास दुनिया को देने के लिए समावेशी विचार हैं। जहां साझापन सौंदर्य की तरह है, विविधता और बहुलता का यहाँ उत्सव मनाया जाता है। हम पूजा में भी अनेक देवताओं की पूजा करते हैं। बहुलतावादी समाज होने कारण हममें मर्यादितता का सदैव स्वागत किया। इसका उदाहरण हमारी 'शास्त्रार्थ' परंपरा है। इसलिए 'एक किताब, एक विचार, एक देवता' को मानने और दूसरे विचार को समाप्त करने को आतुर विचार भारत को नहीं समझ सकते। जहां दुनिया के हर पंथ के लोग नैसर्गिक सजजता से सांस ले सकते हैं। यहां कोई श्रेष्ठ और निक्षुद्र नहीं है। सब समान रूप से इस धरती मां की संतानें हैं। ऐसे में भारत केंद्रित विमर्श ही विश्व शांति का मार्ग है। 'स्वत्व' ही मार्ग है, जिस पर चलने के लिए हमें महात्मा

गांधी, धर्मपाल, सीताराम गोयल, दीनदयाल उपाध्याय, वासुदेव शरण अग्रवाल, निर्मल वर्मा, विद्यानिवास मिश्र का अध्ययन मदद कर सकता है। इससे भारत के मूल विचार को समझने तथा भारत का मौलिक चिंतन स्थापित करने में मदद मिलती है। इससे ही गलत बातों का खंडन करते हुए हम सही विमर्श की स्थापना में सफल हो पाएँ।

भारतीय उदात्त जीवन मूल्यों के आधार पर संपूर्ण विश्व के लिए हमें ही वैश्विक बौद्धिक नेतृत्व देना होगा। जिसकी एक झलक हमें स्वामी विवेकानंद में दिखती है। ऐसे में ह्रस्वबोधद्वय का जागरण ही विकल्प है। पहले हमारे अपने विचार को भारत तो स्वीकार करें। वह आत्मदैन्य से मुक्त होकर 'भारत' को 'भारत' (इंडिया नहीं) की नजर से देखना प्रारंभ करें। वैचारिक साम्राज्यवाद से मुक्ति के लिए कई स्तरों पर कार्य करने की आवश्यकता है। इसे इस तरह से समझिए कि गोरा बनाना और अंग्रेजी सिखाना आज भी हिंदुस्तान में दो सबसे बड़े व्यापार हैं। यही उपनिवेशवादी मानसिकता है। इसके चलते ही हमारे गांव उड़ड़ते चले गए और संयुक्त परिवार बिखर गए। आज एकल परिवारों के नाते अलग तरह के सामाजिक-सांस्कृतिक संकेत हमारे सामने हैं। जाति, भाषा, क्षेत्र,पंथ की लड़ाइयों को छोड़कर भी बहुत सी विभाजनकारी बातें हर दिन आज भी खोजी जाती हैं , फिर आख्यान (नॉरेटिव) गढ़े जाते हैं। भारत जिसे कभी 'इंडिया' बनाने की कोशिशें हुईं, उसे भारत बनाए रखने के लिए हमें ही आगे आना होगा। क्योंकि भारत का नोट होना, उस विचार का मिट जाना होगा, जिसने हमें 'सुधैव कुटुम्बकम्' का संदेश दिया। जिसने हमें राम, कृष्ण, विष्णु, बुद्ध, महावीर, गुरु नानक देव जैसे नायक दिए। जिसने सर्वत्र भक्तवत् सुखान्धर में अपनी मुक्ति देखी और लोक-मंगल जिसका मूलमंत्र रहा।

क्या मुंबई में खौफ फिर लौट आया है?

खबर सुर्खियों में आना स्वाभाविक है। टाइगर श्रॉफ की लोकप्रियता के कारण इस घटना पर देशभर की निगाहें टिकनी भी असामान्य नहीं है। मगर इस घटना का सबसे गंभीर पहलु यह है कि गोलीबारी की चपेट में वे लोग भी आ सकते थे, जिनका न तो फिल्मी दुनिया से कोई संबंध है और न ही किसी विवाद से। ड्राइवर और ऑटो-रिक्शा चालक जैसे आम लोग ऐसी घटनाओं में बिना किसी गलती के अपनी जान जोखिम में डाल देते हैं। सवाल यह है कि अगर सार्वजनिक स्थानों पर इस तरह अचानक गोलियां चलाई जा सकती हैं, तो आम नागरिक कितने सुरक्षित हैं? सड़क पर खड़ा व्यक्ति, बाजार में खरीदारी करने वाला परिवार, देर रात ड्यूटी से लौटता कर्मचारी और अपने बच्चों के साथ बाहर निकला अभिभावक। इन सभी को सुरक्षा का भरोसा मिलना चाहिए। कानून-व्यवस्था का वास्तविक आकलन केवल बड़े लोगों की सुरक्षा से नहीं, बल्कि आम जनता के भयमुक्त जीवन से होता है। मुंबई ने एक दौर में अंडरवर्ल्ड, जबरन वसूली और संगठित अपराध की चुनौतियों का सामना किया है। उस दौर में फिल्म उद्योग, कारोबारी जगत और आम नागरिकों के बीच भय का वातावरण पैदा करने वाली घटनाएं भी हुई थीं। पुलिस की कार्रवाई, खुफिया तंत्र की सक्रियता और कानून के सख्त इस्तेमाल से शहर ने कई मोर्चों पर अपनी स्थिति मजबूत की। ऐसे में गोलीबारी जैसी कोई घटना लोगों को उस पुराने दौर की याद दिला सकती है। हालांकि, किसी एक घटना के आधार पर यह निष्कर्ष निकालना उचित नहीं होगा कि मुंबई में अंडरवर्ल्ड का पुराना आतंक लौट आया है। इसके पीछे व्यक्तिगत रंजिश, अपराधिक गिरोहों की गतिविधि, धमकी, वसूली या कोई अन्य कारण है या नहीं, यह जांच पूरी होने के बाद ही स्पष्ट होगा। लेकिन इतना तय है कि ऐसी घटनाओं को हलके में लेने की गुंजाइश नहीं है। समय रहते अपराधियों की पहचान, उनके नेटवर्क का खुलासा और हथियारों की उपलब्धता के स्रोत तक पहुंचना जरूरी है। यदि घटना के पीछे संगठित अपराध का हाथ निकलता है, तो कार्रवाई केवल गोली चलाने वालों तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि पूरे नेटवर्क को ध्वस्त करने की दिशा में बढ़ी चाहिए। मुंबई पुलिस देश के सबसे अनुभवी पुलिस बलों में गिनी

जाती है। शहर की आबादी, आर्थिक गतिविधियों और संवेदनशील प्रतिष्ठानों को देखते हुए यहां सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखना एक बड़ी जिम्मेदारी है। ऐसे में पुलिस के सामने चुनौती केवल घटना के बाद आरोपियों को गिरफ्तार करने की नहीं, बल्कि भविष्य में इस तरह की वारदातों को रोकने की भी है। जांच एजेंसियों को घटनास्थल के सीसीटीवी फुटेज, प्रत्यक्षदर्शियों के बयान, इस्तेमाल किए गए हथियारों और हमलावरों के आने-जाने के रास्तों की पड़ताल करनी चाहिए। गोलीबारी के पीछे की मंशा का पता लगाना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। क्या किसी को डराने की कोशिश की गई? क्या किसी तरह की धमकी दी गई थी? क्या यह किसी आपराधिक गिरोह की गतिविधि है? इन सभी सवालों के जवाब तथ्यों और साक्ष्यों के आधार पर सामने आने चाहिए। साथ ही, घायल लोगों को बेहतर उपचार उपलब्ध कराने और उनके बयान दर्ज करने की प्रक्रिया में संवेदनशीलता बरतना जरूरी है। पुलिस की जांच पारदर्शी होनी चाहिए, ताकि जनता के बीच फैलने वाली अफवाहों और अनावश्यक भय पर भी अंकुश लगाया जा सके।

किसी महानगर में गोलीबारी की घटना केवल पुलिस की गत पर सवाल नहीं उठती, बल्कि यह भी पूछती है कि अपराधियों तक हथियार कैसे पहुंच रहे हैं। यदि जांच में अवैध हथियारों के इस्तेमाल की पुष्टि होती है, तो हथियारों की तस्करी और उनकी आपूर्ति करने वाले नेटवर्क पर कार्रवाई अनिवार्य हो जाती है। अपराध रोकने के लिए सड़कों पर पुलिस की मौजूदगी के साथ-साथ खुफिया जानकारी जुटाने, सतर्क गतिविधियों पर नजर रखने और विभिन्न सुरक्षा एजेंसियों के बीच समन्वय को मजबूत करना होगा। संवेदनशील इलाकों में प्रभावी निगरानी, त्वरित पुलिस प्रतिक्रिया और तकनीक का जिम्मेदार इस्तेमाल अपराधियों के लिए मुश्किलें बढ़ा सकता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि कानून का भय अपराधियों के मन में होना चाहिए, नागरिकों के मन में नहीं। यदि अपराधी इस विश्वास के साथ वारदात करते हैं कि वे आसानी से बच निकलेंगे, तो यह व्यवस्था के लिए गंभीर चेतावनी है। त्वरित जांच, निष्पक्ष अभियोजन और दोष सिद्ध होने पर कानून के अनुसार सजा ही न्याय व्यवस्था में विश्वास मजबूत कर सकती है। ऐसी घटनाओं के बाद सोशल मीडिया पर

तरह-तरह के दावे और अपुष्ट जानकारीयां प्रसारित होने लगती हैं। कभी किसी गिरोह का नाम उछाला जाता है, तो कभी बिना प्रमाण किसी बड़े पड़वर्ग की चर्चा होने लगती है। इससे जांच प्रभावित हो सकती है और आम लोगों में बेवजह डर फैल सकता है।मीडिया की जिम्मेदारी है कि वह घटना की गंभीरता को सामने लाए, पुलिस से जवाबदेही मांगे और जनता को सही जानकारी दे। लेकिन जांच पूरी होने से पहले किसी व्यक्ति या संगठन को दोषी ठहराना प्रचक्रारिता के मूल सिद्धांतों के विरुद्ध है। लोकतंत्र में सवाल पूछना जरूरी है, मगर सवालों के बचक तथ्यों और प्रमाणों के आधार पर तलाशना उससे भी अधिक जरूरी है। मुंबई की कभी पहचान उसकी जीवंतता, मेहनतकश लोगों और विपरीत परिस्थितियों से उबरने की क्षमता से बनी है। किसी गोलीबारी की घटना से पूरे शहर की असुरक्षित घोषित करना उचित नहीं, लेकिन ऐसी वारदातों को सामान्य मान लेना भी खतरनाक है। शहर की आर्थिक गतिविधियों और सामाजिक जीवन को निर्भय बनाए रखने के लिए नागरिकों का भरोसा कायम रहना चाहिए।महाराष्ट्र सरकार और मुंबई पुलिस को यह सुनिश्चित करना होगा कि अपराधियों के खिलाफ कार्रवाई निष्पक्ष, प्रभावी और समयबद्ध हो। फिल्मी सितारों और अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों की सुरक्षा के साथ आम नागरिकों की सुरक्षा भी प्राथमिकता होनी चाहिए, जो रोज सड़कों पर काम करते हैं और शहर की अर्थव्यवस्था को गति देते हैं।टाइगर श्रॉफ की गाड़ी पर कथित गोलीबारी की घटना मुंबई के लिए एक गंभीर चेतावनी है। अभी यह कहना जल्दबाजी होगी कि शहर में अंडरवर्ल्ड का पुराना खौफ लौट आया है, लेकिन यह सवाल जरूर उठता है कि अपराधियों के हासले बंद? की किसी भी संभावना को समय रहते कैसे रोकना जाए। पुलिस को जांच के जरिए सच्चाई सामने लानी होगी, अपराधियों को कानून के कटघरे में खड़ा करना होगा और जनता को सुरक्षा का भरोसा देना होगा। मुंबई को डर के साये में नहीं, विश्वास और सुरक्षा के वातावरण में आगे बढ़ े। चाहिए।मानवारी की असली ताकत उसकी चमक-दमक नहीं, बल्कि उसके नागरिकों का साहस और कानून पर उनका भरोसा है। इस भरोसे को बनाए रखना ही शासन और पुलिस की सबसे बड़ी कसौटी है।



संक्षिप्त समाचार

बेल्जियम में आंसू गैस और पानी की बौछारों का इस्तेमाल

ब्रसेल्स , एजेंसी। प्रदर्शनों की आंच बेल्जियम तक भी पहुंची। राजधानी ब्रसेल्स में पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को हटाने के लिए आंसू गैस और पानी की बौछारों का इस्तेमाल किया। पुलिस का आरोप था कि प्रदर्शनकारियों ने अधिकारियों पर वस्तुएं फेंकीं और आगजनी की। राजधानी के पूर्व में स्थित लीज शहर में भी पानी की बौछारों का इस्तेमाल किया गया। हालांकि, पुलिस ने वहां प्रदर्शन में शामिल लोगों की संख्या का अनुमान नहीं बताया।

पुर्तगाल में महंगे मकानों और किराये के खिलाफ प्रदर्शन

लिस्बन , एजेंसी। पुर्तगाल की राजधानी लिस्बन में भी हजारों लोग बढ़ती जीवनयापन लागत, कम वेतन और बड़े शहरों में मकान खरीदने या किराये पर लेने में बढ़ती मुश्किलों के खिलाफ सड़कों पर उतरे। रिपोर्ट के मुताबिक, पुर्तगाल में मकानों की कीमतें 2017 के बाद से दोगुने से अधिक हो चुकी हैं, जबकि नए किरायेदारी समझौतों के तहत किराये में भी तेज बढ़ोतरी हुई है। पुर्तगाल के संसदीय मामलों के मंत्री कार्लोस अब्रू अमोरिम ने शुक्रवार को कहा कि सरकार सड़कों से उठने वाले नारों के दबाव में झुकने वाली नहीं है। दूसरी ओर, प्रदर्शनकारियों ने राजनीतिक नेताओं पर उनकी समस्याओं से कटे होने का आरोप लगाया।

अल्बानिया में छात्र आंदोलन, शिक्षा मंत्रालय का घेराव

तिराना , एजेंसी। यूरोप के कई अन्य देशों में बिगड़ी शिक्षा व्यवस्था को लेकर युवाओं का आक्रोश थमने का काम नहीं ले रहा। अल्बानिया में पिछले लगातार चार दिनों से युवा सड़कों पर हैं। टयूशन फीस में वृद्धि, विश्वविद्यालयों में खराब सुविधाएं और पढ़ाई के बाद रोजगार के अवसरों में कमी से भड़के युवाओं ने शनिवार को शिक्षा मंत्रालय का घेराव किया। इस दौरान कई जगहों पर छात्र व सुरक्षाकर्मी भिड़ गए। फ्लेमिंगो रिक्टोव्यूशन... अल्बानिया की राजधानी तिराना और अन्य शहरों में बड़े पैमाने पर यह आंदोलन 23 मई 2026 से चल रहा है। अक्टूबर मध्य में आंदोलन ने फिर से तेजी पकड़ी। शिक्षा व्यवस्था के अलावा ज्वर्नक के संरक्षित तटीय क्षेत्र में लगजरी टूरिज्म प्रोजेक्ट्स और निर्माण के खिलाफ स्थानीय निवासी और सामाजिक कार्यकर्ता आंदोलनरत हैं। प्रदर्शनकारी भ्रष्टाचार और महंगाई पर निशाना साधते हुए अल्बानियाई पीएम एदी रामा के इस्तीफे की मांग पर अड़े हैं।

पाकिस्तानी अधिकारियों का दावा: जवाबी कार्रवाई में मारे गए अफगान तालिबान के कई सदस्य

पेशावर , एजेंसी। पाकिस्तान के सुरक्षा बलों ने शनिवार को खैबर पख्तूनख्वा में सीमा पर कथित तौर पर बिना उकसावे के की गई गोलीबारी के बाद जवाबी कार्रवाई की। इसमें अफगान तालिबान के कई जवान मारे गए। सुरक्षा अधिकारियों ने यह जानकारी दी। एक सुरक्षा अधिकारी ने बताया कि ताइदा सेक्टर, ऊपरी कुर्रम और घुज गद्दी इलाकों में गोलीबारी की खबर मिली थी। आरोप है कि अफगान तालिबान ने आतंकवादियों को सीमा पार घुसपैठ कराने में मदद देने के लिए गोलीबारी की। अधिकारी के अनुसार, पाकिस्तानी सेना ने जवाबी कार्रवाई की। इसमें घुज गद्दी के सीमा क्षेत्र के पास अफगान तालिबान के कई जवान मारे गए। अपर कुर्रम सेक्टर में पाकिस्तानी बलों ने अफगान तालिबान की टॉपसर चौकी और शिपोला बेस कैंप को निशाना बनाया। अधिकारी ने दावा किया कि जवाबी कार्रवाई में शिपोला बेस कैंप पूरी तरह नष्ट हो गया। उन्होंने कहा कि पाकिस्तानी बलों की कार्रवाई के बाद तालिबान के कई जवान कथित तौर पर अपनी सीमा चौकी छोड़कर भाग गए। इस महीने की शुरुआत में पाकिस्तान ने अफगानिस्तान में आतंकवादियों के ठिकानों पर हवाई हमले किए थे। पाकिस्तान के सूचना मंत्रालय ने इन्हें सुनिश्चित और सावधानीपूर्वक किए गए हमले बताया था। इन हमलों में प्रतिबंधित संगठन फिक्तान अल-खवारिज से जुड़े कई आतंकवादी मारे गए थे। पाकिस्तान की संघीय सरकार प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) के आतंकवादियों के लिए 'फिक्तान अल-खवारिज' शब्द का इस्तेमाल करती है। 2021 में अफगान तालिबान के सत्ता में लौटने के बाद से पाकिस्तान में सीमा पार से होने वाले आतंकवादी हमलों में तेज बढ़ोतरी हुई है। खासकर खैबर पख्तूनख्वा (केपी) और बलूचिस्तान में ऐसे हमले बढ़े हैं।

पूरे फ्रांस में विरोध प्रदर्शन, सड़कों पर उतरे आठ लाख लोग, 150 से अधिक पुलिसकर्मी घायल

पेरिस , एजेंसी। ईधन की बढ़ती लागत और लगातार बढ़ रही महंगाई के कारण पूरे फ्रांस में विरोध प्रदर्शन हो रहे हैं. इन प्रदर्शनों के दौरान हिंसक झड़पें, आगजनी और लूटपाट की घटनाएं हुई हैं. आयोजकों का दावा है कि देश भर में हुए 110 मान में लगभग आठ लाख प्रदर्शनकारी सड़कों पर उतरे थे. प्रधानमंत्री सेबेस्टियन लेकोर्नू ने कहा कि 150 से अधिक पुलिस अधिकारी घायल हुए हैं और लगभग 1,200 लोगों को गिरफ्तार किया गया है.

फ्रांस के गृह मंत्री ने उपद्रवियों को 'बेहद हिंसक, कट्टर वामपंथी समूह' बताया. उन्होंने कहा कि ये लोग पुलिस से भिड़ना चाहते थे और उन्होंने सिटी हॉल तथा स्थानीय सरकारी कार्यालयों जैसी सार्वजनिक इमारतों को निशाना बनाया. उन्होंने बताया कि इन समूहों के साथ ऐसे अपराधी भी जुड़ गए थे जो दुकानों में लूटपाट करना चाहते थे. उन्होंने कहा कि गिरफ्तार किए गए लोगों में से ज्यादातर वयस्क हैं. मध्य पेरिस में भी कई जगहों पर घटनाएं हुईं.

फ्रांसीसी राष्ट्रपति एमैनुएल मैक्रों ने 'एक्स' पर एक संदेश में कहा, 'हमारे गणतंत्र में हिंसा के लिए कोई जगह नहीं है. जिन लोगों ने संपत्ति में तोड़फोड़ की, सरकारी कार्यालयों और व्यवसायों पर हमले किए, और यहां तक ​​​​?कि हमारे टाउन हॉल में लूटपाट भी की, उन पर मुकदमा चलाया जाएगा और उन्हें सजा दी जाएगी.



थी. सितंबर के मध्य से स्कूलों को बंद कराकर विरोध कर रहे छात्र समूहों ने अपने समर्थकों से उनके साथ जुड़ने की अपील की है.फ्रांस के प्रमुख मजदूर संघों में से एक, सीजीटी ने भी इन प्रदर्शनों का समर्थन किया है. उन्होंने बेहतर वेतन और पेंशन, कम कीमतों, और लोगों की सामाजिक अन्याय के खिलाफ शुरू हुए 'येले वेस्ट' (पीली जैकेट) आंदोलन को फिर से जीवित करने के लिए कहा गया था. प्रदर्शनकारियों ने सरकार के प्रति भारी निराशा और गुस्सा जाहिर किया. हाल के महीनों में पेट्रोल, ऊर्जा और खाद्य पदार्थों की कीमतों में भारी उछाल आया है. ये आंदोलन उसके खिलाफ हैं. कई प्रदर्शनकारियों को चमकीले पीले रंग की जैकेट पहने देखा गया. यह 2018 के प्रदर्शनों का प्रतीक बन गई थी. एक प्रदर्शनकारी माबुक ने कहा, 'हर तरफ निराशा और गुस्से का माहौल है.' वे सभी उम्र के शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों के साथ मार्च कर रही

थी. सितंबर के मध्य से स्कूलों को बंद कराकर विरोध कर रहे छात्र समूहों ने अपने समर्थकों से उनके साथ जुड़ने की अपील की है.फ्रांस के प्रमुख मजदूर संघों में से एक, सीजीटी ने भी इन प्रदर्शनों का समर्थन किया है. उन्होंने बेहतर वेतन और पेंशन, कम कीमतों, और लोगों की सामाजिक अन्याय के खिलाफ शुरू हुए 'येले वेस्ट' (पीली जैकेट) आंदोलन को फिर से जीवित करने के लिए कहा गया था. प्रदर्शनकारियों ने सरकार के प्रति भारी निराशा और गुस्सा जाहिर किया. हाल के महीनों में पेट्रोल, ऊर्जा और खाद्य पदार्थों की कीमतों में भारी उछाल आया है. ये आंदोलन उसके खिलाफ हैं. कई प्रदर्शनकारियों को चमकीले पीले रंग की जैकेट पहने देखा गया. यह 2018 के प्रदर्शनों का प्रतीक बन गई थी. एक प्रदर्शनकारी माबुक ने कहा, 'हर तरफ निराशा और गुस्से का माहौल है.' वे सभी उम्र के शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों के साथ मार्च कर रही

एलिजीज के आसपास के स्टेशन, और राष्ट्रपति भवन, संसद तथा सरकारी कार्यालयों के पास के स्टेशन शामिल थे.इस बीच, शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों का एक बड़ा समूह उस मार्च में शामिल हो गया जो उत्तर-पश्चिमी पेरिस की ओर बढ़ रहा था. भीड़ ने फ्रांस का राष्ट्रगान गाया और झंडे लहराए. कुछ लोगों ने तुरही और वायलिन भी बजाए.फ्रांस के तीसरे सबसे बड़े शहर ल्योन में, जहां लगभग 20000 प्रदर्शनकारी मार्च में शामिल हुए थे।

एक पर्यटक कार्यालय के अंदर आग लग गई.मध्य फ्रांस के एक मध्यम आकार के शहर लिमोगेस में, सिटी हॉल में आग लगा दी गई. पेरिस में देर शाम तक कई जगह आग जलती रही। वीडियो फुटेज में कुछ प्रदर्शनकारी सड़कों पर लगी आग की और भड़काते दिखाई दिए। दंगा नियंत्रण पुलिस ने भीड़ को तितर-बितर करने के लिए आंसू गैस छोड़ी और लाठीचार्ज किया। एक ऐतिहासिक इमारत को भी आग के हवाले किए जाने की खबर सामने आई। वीडियो में 143 साल पुराने फ्रांसीसी स्मारक को आग से क्षतिग्रस्त होते देखा गया। आग के कारण इमारत की छत नीचे की मंजिलों पर गिर गई। लिमोज के स्थानीय अधिकारियों ने बताया कि प्रदर्शनकारियों की ओर से कारी हिंसे में आग लगाए जाने के बाद टाउन हॉल का करीब दो-तिहाई हिस्सा नष्ट हो गया।

अमेरिका: कंसास में फुटबॉल मैच के दौरान मैदान में घुसी कार; बच्चे समेत दो की मौत, हिरासत में वाहन चालक

कंसास , एजेंसी। अमेरिका के कंसास राज्य के विचिता शहर में शनिवार को एक दर्दनाक हादसा हुआ। एक स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में फुटबॉल मैच के दौरान कार मैदान पर घुस गई। इस घटना में एक बच्चे समेत दो लोगों की मौत हो गई, जबकि कई अन्य घायल हो गए। सीएनएन ने स्थानीय अधिकारियों के हवाले से बताया कि घटना के बाद पुलिस ने कार चालक को हिरासत में ले लिया। विचिता पुलिस विभाग के आरोन मोसेस ने कहा कि चालक हिरासत में है और उससे आम लोगों को अब कोई अतिरिक्त खतरा नहीं है। अधिकारियों के अनुसार, यह घटना स्टाइवर स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में हुई। स्थानीय समय के मुताबिक, दोपहर करीब 3:25 बजे कार परिसर में घुस गई। उस समय मैदान पर फुटबॉल मैच चल रहा था। मोसेस ने बताया कि घटना के वक्त कार में दो नाबालिग भी सवार थे। हादसे के बाद वाहन घटनास्थल पर ही मौजूद रहा। मृतकों की पहचान अभी सार्वजनिक नहीं की गई है। अधिकारियों के मुताबिक, मरने वालों में एक नाबालिग और एक वयस्क शामिल हैं। जांच एजेंसियां घटना के

कारणों का पता लगाने में जुटी हैं। पुलिस घटनास्थल से मिले सबूतों का विश्लेषण कर रही है, ताकि हादसे की परिस्थितियों को समझा जा सके। सीएनएन के मुताबिक, जांचकर्ताओं ने अभी यह तय नहीं किया है कि कार कितनी तेज रफ्तार से चल रही थी और वह सुरक्षा घेरा पार कर मैदान तक कैसे पहुंची। हादसे के बाद दो घेराव परिसर में होने वाले कार्यक्रम तत्काल रोक दिए गए।

कंसास स्टेट हाई स्कूल एक्टिविटीज एसोसिएशन (केएसएचएसए) ने बताया कि स्टाइवर स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में चल रही राज्य स्तरीय फुटबॉल प्रतियोगिता के तीसरे स्थान और चैंपियनशिप के मुकाबले स्थगित कर दिए गए। पुलिस ने घटनास्थल की जांच और सुरक्षा व्यवस्था के लिए आसपास के मैदान को सुरक्षित किया था। एसोसिएशन ने हादसे से प्रभावित परिवारों और टीमों के प्रति संवेदना जताई। उसने सोशल मीडिया में एक एक्स पर कहा कि आपात स्थिति को देखते हुए दोनों मुकबलों को बाद की तारीख तक स्थगित करना उचित समझा गया।

रूस से तेल खरीद की छूट पर रुबियो बोले- वैश्विक अर्थव्यवस्था का आकलन करने के लिए 60 दिन चाहते हैं ट्रंप

वॉशिंगटन , एजेंसी। अमेरिका के विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने ट्रंप के रूसी तेल को लेकर टैरिफ पर छूट देने के फैसले पर प्रतिक्रिया दी है. रुबियो ने कहा कि इस कदम के वैश्विक अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले असर का विश्लेषण करने के लिए राष्ट्रपति ट्रंप ने 60 दिन की छूट दी है. रुबियो शनिवार शाम को यहां के पास जॉइंट बेस एंड्रयूज में सवालों का जवाब दे रहे थे, जब वे उज्बेकिस्तान और भारत के छह दिन के दौरे पर खाना हुए थे. रुबियो ने रूस और ईरान पर प्रतिबंध अधिनियम या ग्राहम अधिनियम के तहत ट्रंप द्वारा दी गई छूट पर एक सवाल के जवाब में कहा, 'मुझे लगता है कि राष्ट्रपति यह विश्लेषण करने के लिए 60 दिन का समय लेना चाहते हैं कि प्रतिबंध और शुल्क लगाने का वैश्विक अर्थव्यवस्था और यहां तक ​​​​?कि अमेरिकी अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ेगा.' शुक्रवार को



ट्रंप ने ग्राहम एक्ट के उन खास नियमों को हटा दिया जो रूस से तेल खरीदने वाले देशों पर सजा देने वाले टैरिफ लगाने की इजाजत देते थे, जिससे भारत को राहत मिली. शुक्रवार को ट्रंप के साइन किए गए एग्जीक्यूटिव ऑर्डर में कहा गया है कि ये छूट तब तक लागू रहेगी जब तक राष्ट्रपति या विदेश मंत्री, वित्त मंत्री और ट्रेड रिप्रेजेंटेटिव से सलाह करके, यह तय नहीं कर लेते कि आगे की कार्रवाई सही है. मियामी के पास मार-ए-लागो रिसॉर्ट में रिपोर्टें से बात करते हुए ट्रंप ने कहा कि ग्राहम एक्ट के तहत पाबंदियों को हटाने

टोरंटो, एजेंसी। कनाडा के अल्बर्टा प्रांत में स्थित सैन्य अड्डे पर एक गंभीर घटना के बाद भीषण आग लग गई। इस घटना में कई लोगों की मौत हुई है और अन्य घायल हुए हैं। कनाडा के रक्षा मंत्री डेविड मैकगिन्टी ने शनिवार को इसकी पुष्टि की। हालांकि, उन्होंने मृतकों और घायलों की संख्या या घटना के कारणों का खुलासा नहीं किया है। समाचार एजेंसी एसोसिएटेड प्रेस के मुताबिक, आग तेज हवाओं के कारण तेजी से फैल रही है। स्थानीय प्रशासन ने बताया कि आग सैन्य अड्डे की बाड़ पार कर आसपास के इलाके की ओर बढ़ गई थी। कई क्षेत्रों के अग्निशमन दल आग बुझाने के अभियान में जुटे हैं। फ्लिहाल, प्रशासन ने आसपास के लोगों के लिए किसी तरह का निकासी आदेश जारी नहीं किया है।

रक्षा मंत्री बोले- स्थिति बेहद संवेदनशील : कनाडा के रक्षा मंत्री डेविड मैकगिन्टी ने कहा कि सैन्य अड्डे पर हुई घटना में लोगों की जान गई है और कई लोग घायल हुए हैं। उन्होंने कहा 'मुझे यह बताते हुए दुख आ रहा है कि सैन्य अड्डे पर हुई घटना के परिणामस्वरूप लोगों की मौत हुई है और कई लोग घायल भी हुए हैं। मैकगिन्टी ने घटना की गंभीरता को देखते हुए स्थिति को बेहद सक्रिय और संवेदनशील बताया। उन्होंने कहा कि अधिकारी अभी यह पता लगाने में जुटे हैं कि आखिर हुआ क्या था। उन्होंने यह भी संकेत दिया कि मामले

में आगे और जानकारी दी जाएगी। रक्षा मंत्री के मुताबिक, रॉयल कैनेडियन माउंटेड पुलिस भी जांच में शामिल है। तेज हवाओं के कारण तेजी से फैल रही आग वेनराइट के म्युनिसिपल डिस्ट्रिक्ट ने बताया कि शनिवार को आग सैन्य अड्डे की बाड़ पार कर गई और तेज हवाओं के कारण तेजी से फैलने लगी। आग पर काबू पाने के लिए अलग-अलग क्षेत्रों से अग्निशमन दल बुलाए गए हैं। आपातकालीन स्थिति से निपटने के लिए कनाडाई सशस्त्र बलों के साथ संघीय, प्रांतीय और स्थानीय अधिकारी मिलकर काम कर रहे हैं। आसपास के वेनराइट समुदाय की ओर से अस्पताल और अग्निशमन संबंधी सहायता भी उपलब्ध करवाई जा रही है।

पीएम कनाडा ने बताया गंभीर घटना कनाडा के प्रधानमंत्री मार्क कार्नी ने शनिवार को सोशल मीडिया पर एक पोस्ट के जरिए अल्बर्टा स्थित सीएफबी वेनराइट सैन्य अड्डे पर आग लगने की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि एक गंभीर घटना के कारण यहां बड़ी आग लगी है। कार्नी ने घटना से प्रभावित सभी महिला और पुरुष सैन्यकर्मियों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि उनकी सोच और प्रार्थनाएं प्रभावित लोगों के साथ हैं। वहीं, अल्बर्टा की प्रीमियर डेनियल स्मिथ ने आग को गंभीर और दुखद घटना बताया। उन्होंने कहा कि इस घटना से कई सैन्यकर्मी प्रभावित हुए हैं।

इटली में महंगाई के खिलाफ हिंसक प्रदर्शन: मेलोनी बोलीं- विरोध करना अधिकार शहरों को आग के हवाले करना नहीं

रोम , एजेंसी। इटली की प्रधानमंत्री जोर्जिया मेलोनी ने देश के कई बड़े शहरों में महंगाई के खिलाफ हुए प्रदर्शनों के दौरान हिंसा और तोड़फोड़ की कड़ी निंदा की है। उन्होंने कहा कि शांतिपूर्ण प्रदर्शन लोकतंत्र का अहम हिस्सा है, लेकिन राजनीतिक हिंसा और सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाने की घटनाएं बर्दाश्त नहीं की जा सकती। मेलोनी ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक बयान जारी कर शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों और हिंसा करने वालों के बीच अंतर किया। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में अपनी बात रखने और प्रदर्शन करने के अधिकार का सम्मान किया जाना चाहिए। पीएम मेलोनी ने कहा, 'मैं उन हजारों लोगों का बहुत सम्मान करती हूं, जिन्होंने आज शांतिपूर्ण तरीके से प्रदर्शन किया। इनमें ट्रेड यूनियन सीजीआईएल के आठ्वान पर जुटे लोग भी शामिल थे। इस प्रदर्शन में वामपंथी नेता भी शामिल हुए। प्रदर्शन का मूवा चाहे कुछ भी हो, इसमें भागीदारी किसी भी स्वस्थ लोकतंत्र की बुनियाद है। प्रधानमंत्री ने कहा कि कई शहरों में कानून लागू कराने वाले अधिकारियों को सीमा हमलों और तोड़फोड़ों का सामना करना पड़ा। हालात को देखते हुए प्रशासन को आपात कदम उठाने पड़े। मेलोनी ने कहा, 'दूसरी ओर, हम इटली के अन्य शहरों में हुई घटनाओं को नजरअंदाज नहीं कर सकते। मिलान में सुरक्षा बलों ने इन पथर फेंके गए, अधिकारी घायल हुए और हिंसा तथा तोड़फोड़ के कारण जुलूस रोकना पड़ा। टयूरिन में कुछ लोगों को पथर और खिड़कियां तोड़ने में इस्तेमाल होने



वाले हथौड़ों के साथ रोका गया। बोलोल्या में हिंसा के कारण रेलवे स्टेशन को एहतियातन बंद करना पड़ा। उन्होंने हिंसा करने वालों को ऐसे उपद्रवी बताया, जो प्रदर्शनों के अधिकार का सम्मान करना चाहते हैं, सुरक्षा सुनिश्चित करने वालों पर हमला करते हैं और पूरे शहर को बंधक जैसी स्थिति में डाल देते हैं। मेलोनी ने कहा, 'प्रदर्शन करना अधिकार है। हमारे शहरों को आग के हवाले करना नहीं। '

विपक्ष से हिंसा की स्पष्ट निंदा करने की अपील : इटली की प्रधानमंत्री ने विपक्षी दलों के नेताओं से सड़क पर होने वाली हिंसा के खिलाफ स्पष्ट रुख अपनाने की अपील की। उन्होंने कहा कि इस मुद्दे पर अस्पष्ट रवैया अपनाने से सार्वजनिक सुरक्षा और कानून व्यवस्था प्रभावित होती है। मेलोनी ने कहा, 'मैं विपक्ष से फिर अपील करती हूं कि इस मामले में अस्पष्ट रुख न अपनाएं। हिंसा की इन घटनाओं की स्पष्ट रूप से निंदा करने वालों के विरुद्ध कड़े और सह संदेश दें कि हर प्रदर्शन शांतिपूर्ण होना चाहिए। उन्होंने कहा कि ऐसी घटनाओं के खिलाफ सभी राजनीतिक दलों को एकजुट होकर आवाज उठानी चाहिए।

यूक्रेन की सैटेलाइट सेवा पर विवाद: रुबियो ने व्हाइट हाउस को बताया बेदाग, कहा- अमेरिका का कोई हाथ नहीं

वॉशिंगटन , एजेंसी। अमेरिका के विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने उन आरोपों को खारिज किया है कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के प्रशासन ने यूक्रेन के डोन में इस्तेमाल होने वाली सैटेलाइट इंटरनेट सेवाओं को जानबूझकर स्वीकृत किया। हालांकि, उन्होंने स्पष्ट किया कि यूक्रेन रूस के भीतर दूर तक हमले करने के लिए अमेरिका की एक अलग सैन्य संचार प्रणाली तक पहुंच मांग रहा है। ज्वाइंट बेस एंड्रयूज में पत्रकारों से बातचीत के दौरान रुबियो ने एलन मस्क की कंपनी स्पेसएक्स की दो सेवाओं स्टारलिनक और स्टारशील्ड के बीच अंतर स्पष्ट किया। उन्होंने कहा कि स्टारलिनक एक

व्यावसायिक सैटेलाइट संचार सेवा है, जबकि स्टारशील्ड का इस्तेमाल सैन्य और रक्षा संबंधी जरूरतों के लिए किया जाता है। यूक्रेन में सैटेलाइट कनेक्टिविटी पर लगी पाबंदियों को लेकर चिंता बढ़ने के बीच रुबियो का यह बयान सामने आया है। यूक्रेन युद्ध के मैदान में तेज गति वाले ड्रोन के संचालन और रूसी हवाई हमलों से बचाव के लिए इन सेवाओं पर निर्भर है।

व्हाइट हाउस ने इंटरनेट की गति कम करने का आदेश नहीं दिया : रुबियो ने कहा, 'व्हाइट हाउस में किसी ने भी किसी को इंटरनेट या उसकी गति धीमी करने का आदेश नहीं दिया, ताकि कुछ खास ड्रोन उसका



इस्तेमाल न कर सकें।' उन्होंने कहा कि उसकी जानकारी के अनुसार, सेवा में आई बाधा को दूर कर दिया गया है और स्थिति पहले जैसी हो गई है। हालांकि, उन्होंने स्पष्ट किया कि यह जानकारी उन्हें पहले मिली रिपोर्टों पर आधारित थी।

यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की ने भी सैटेलाइट से जुड़ी ड्रोन सेवाओं पर पाबंदियों को लेकर चिंता जताई है। यह चिंता ऐसे समय सामने आई है, जब रूसी सेना यूक्रेन के बुनियादी ढांचे पर लगातार हमले कर रही है। रुबियो ने अमेरिकी हस्तक्षेप के आरोपों को खारिज करते हुए कहा, 'इकसे हमारा कोई लेना-देना नहीं है। '

स्टारलिनक और स्टारशील्ड में बताया अंतर : अमेरिकी विदेश मंत्री ने कहा कि स्टारलिनक और स्टारशील्ड अलग-अलग व्यवस्थाओं के तहत काम करते हैं। उन्होंने स्टारलिनक को व्यावसायिक उत्पाद बताया, जबकि स्टारशील्ड को रक्षा और

सैन्य जरूरतों के लिए विकसित प्रणाली बताया। रुबियो ने कहा कि अमेरिकी सेना स्टारशील्ड का इस्तेमाल करती है और इस सेवा तक यूक्रेन की पहुंच को लेकर बातचीत जारी है। उन्होंने कहा, 'फ्लिहाल यूक्रेन को इसकी सुविधा उपलब्ध नहीं है और इस पर बातचीत चल रही है।' रुबियो के मुताबिक, यूक्रेन ने रूस के भीतर गहराई तक हमले करने के उद्देश्य से इस सैन्य संचार प्रणाली तक पहुंच मांगी है। उन्होंने कहा, 'उन्होंने रूस के भीतर दूर तक हमले करने के लिए इसकी पहुंच मांगी है। फ्लिहाल उनके पास इसकी पहुंच नहीं है। '

अमेरिकी सांसदों ने जांच की मांग की : अमेरिका के नौ

सांसदों के एक द्विदलीय समूह ने यूक्रेनी सेना की सैटेलाइट संचार सेवाओं में आई बाधा की जांच कराने की मांग की है। सांसदों ने रक्षा विभाग के महानिरीक्षक से इस मामले की जांच करने को कहा है। सांसदों ने आशंका जताई कि इस तरह की बाधाओं से अमेरिकी राजनयिकों, सैन्यकर्मियों और सुरक्षा से जुड़े अधिकारियों के लिए जोखिम पैदा हो सकता है। उन्होंने यह भी पता लगाने की मांग की कि क्या अमेरिकी अधिकारियों ने इन पाबंदियों को मंजूरी दी थी या इन्हें इसकी जानकारी पहले से थी। उन्होंने कहा, 'मैंने दूसरे दिन इस बारे में एक रिपोर्ट देखी थी। यह पूरी तरह गलत है। '

+

C
M
Y
K

+

C
M
Y
K

+

+

C
M
Y
K

+

C
M
Y
K

+

मर्यादा पुरुषोत्तम

श्री श्रीराम

रघुकुल की महान परंपरा में अयोध्या नगरी में पिता दशरथ और माता कौशल्या के यहाँ श्रीराम अवतरित हुए। उस समय अयोध्या राज्य में सब ओर सुख शान्ति थी। लेकिन सुदूर दक्षिण भारत में लंकापति रावण आसुरी वृत्तियों को बढ़ाने में लगा था। वह अतिशक्तिमान राक्षसराज धीरे धीरे उत्तर में भी अपना कुप्रभाव फैलाने में सफल हो रहा था जिसके चलते भारतके दक्षिण में स्थित अनेक राज्य और उनके निवासी राजा रावण के राक्षसी प्रभाव का शिकार बनते नजर आ रहे थे। ऐसे में प्राचीन भारत की महान संस्कृति का प्रचार और प्रसार करने की जिम्मेदारी निभाने के लिये प्रभु को स्वयं श्रीराम के रूप में अवतरित होना पड़ा।

भारत को भौगोलिक राज्यों को एकसूत्र में बांधने का अधिकांश श्रेय भगवान राम को ही जाता है। अपने भाई लक्ष्मण और भार्या सीता के साथ 14 बरस उन्होंने लगभग संपूर्ण भारत का भ्रमण किया जगह जगह सात्विकता को बढ़ावा देते तामसिक वृत्तियों का संहार किया। एक ओर ऋषिमुनि जनों का आदर किया तो दूसरी ओर राक्षसों को दण्डित भी किया। ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य समाज के साथ पिछड़े वर्ग के लोगों को साथ लेकर उन्होंने सामाजिक क्रांति की नींव रखी। ठोस उदाहरण देने हो तो आदिवासी सरदार गुह नौका खेनेवाला केवट भक्त शबरी वानर जाति के सुग्रीव और अंगद रीछ जाति के जाम्बुवंत पक्षी जाति के जटायु आदि सब जन के साथ श्रीराम का प्रेमपूर्ण सद्भाव और मैत्री का व्यवहार रहा। ये सब एकजुट होकर श्रीराम के कार्य में लगे रहे। सीताहरण और उसके चलते उसकी तलाश में जहाँ राम लक्ष्मण स्वयं वन में पैदल भटके वहीं इन सब पिछड़ी जाति के सदस्यों ने उनकी निष्काम भाव से सहायता की। रामसेतु और लंकाविजय को सामूहिक और सांघिक एकजुटता की विजय का प्रतीक हम मान सकते हैं।

राजपुत्र होने के नाते श्रीराम का बचपन सुख और समृद्धि में बीता। इस बचपन की दो विशिष्टताएँ थीं। एक तो राम लक्ष्मण भरत और शत्रुघ्न इन चारों भाईयों का अनेखा बंधुप्रेम। मानो चार शरीर और एक आत्मा। माता कैकेयी के अपने बेटे भरत को राजसिंहासन देना और राम को वनवास सुनाना यह एक विचित्र संकट था। किन्तु राम और भरत का प्रेम इन लौकिक स्वार्थ से ऊपर उठकर था। सो भरत ने अयोध्या नगरी के बाहर एक आश्रम में

सन्यासी जैसे रहकर राम के स्थान पर 14 साल राजपाठ संभाला। किशोर अवस्था में अरण्यवासी ऋषिमुनीओं के यज्ञ में विघ्न खलेल डालने वाले राक्षसों का राम लक्ष्मण ने संहार किया और आर्यव्रत की यागयज्ञ रिति को अबाधित रखने में सहायता की। सीता स्वयंवर में पराक्रम और शालीनता का सुरीला संगम बनाते हुये एकपत्नीव्रत जैसी महान सामाजिक परंपरा की नींव रखी। केवल एक दिन में ही एक ओर राज्याभिषेक जैसी अतिआनंददायी तो दूसरी ओर अतिकठोर वनवास की आज्ञा ऐसे पूर्णतः विपरित आदेशों का निःसंकोच और स्थितप्रज्ञभाव से पालन करना केवल अवतार पुरुष को ही संभव हो सकता है। कुल की मर्यादा और शान के खिलाफ और प्राण जाये पर वचन न जाई इस रघुकुल की रीति पर आँच न आये इस प्रयत्न में श्रीराम सफल हुए। सत्यवादी दुर्बनिश्चयी पराक्रमी बंधुप्रेम से ओतप्रोत श्रीराम ने घरगृहस्थी समाज राजकारण और धर्म की किसी भी सीमा का उल्लंघन नहीं किया। इसके चलते वे मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाये।

पिता के वचन का आदर और माता कैकेयी की आज्ञा का पालन करने के लिये श्रीराम ने चौदह बरस के वनवास को भी बड़ी सहजता से स्वीकार किया। बंधुप्रेम से प्रेरित लक्ष्मण और अर्धांगिनी होने के नाते सीता को श्रीराम अपने साथ वन ले गये। यहाँ एक आदर्श गृहस्थ पत्नी भाई और गणनायक के रूप में श्रीराम ने जीवन बिताते अपने व्यक्तिमत्त्व में चार चाँद लगाये। चौदह बरस धर्मपत्नी के सहवास में रहनेपर भी वल्कलधारी मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम और माता सीता संन्यास आश्रम का पालन करते हुए शरीर सुख का त्याग करते हैं। यह उदात्तता भारतीय संस्कृति को छोड़ शायद ही किसी अन्य संस्कृति में पाई जाती हो। ध्येयवादी राम अरण्य में भी ऋषिमुनीओं के आश्रम को भेंट देते और वेद उपनिषद के गहन तत्वों की चर्चा करते। इससे वेदों का अध्यात्मिक ज्ञान सारे

भारत में फैला और आर्यसंस्कृति का सदूर प्रसार एवम् प्रचार हुआ। सीता के अपहरण में अहंकारी रावण और भौतिकता के शिकार राक्षस गण को सबक सिखाने का हेतु निहित था। स्वार्थपरायणता में डूबा रावण इस बात को भूल गया था कि वेदाभ्यास शरीरसुख उपभोग के लिये नहीं बल्कि अपनी आंतरिक देवी प्रतिभाको उद्भूत करने के लिये होता है। अनेक रानियाँ होनेपर भी सीता का हरण कर के उससे जबरदस्ती शादी करने का मोह इस बात का प्रमाण था कि संसार के सारे सुख खुद ही उपभोगना यही उसके लिये एकमात्र जीवन का उद्देश्य था।

जहाँ एक ओर दशानन रावण को श्रीराम ने नष्ट किया वहीं उसी के भाई विभीषण को गले लगाया। इससे यह साफ जाहिर होता है कि श्रीराम ने रावण का वध उसका राज्य हड़पने के वास्ते नहीं किया था बल्कि धर्म की स्थापना के लिये यह आवश्यक सा हो गया था।



आज भी पूजे जाते हैं दशानन

असत्य पर सत्य की विजय का संदेश देने वाले विजयादशमी पर्व पर जहाँ एक ओर लाखों की संख्या में लोग भगवान श्रीराम की पूजा करते हैं, वहीं देश में कुछ लोग रावण को अपना आराध्य मानकर शक्ति के रूप में उसकी पूजा करते हैं।

उत्तरप्रदेश के महानगरों में शुमार कानपुर शहर के शिवाला इलाके में एक मंदिर ऐसा है, जहाँ शक्ति के प्रतीक के रूप में लंकाधिराज रावण की पूजा अर्चना और आरती होती है तथा श्रद्धालु अपने लिए मन्त्रों मांगते हैं। इस मंदिर का नाम 'दशानन मंदिर' है और इसका निर्माण वर्ष 1890 में हुआ था।

दशानन मंदिर के दरवाजे साल में केवल एक बार दशहरे के दिन ही सुबह नौ बजे खुलते हैं और मंदिर में लगी रावण की मूर्ति का पहले पूरी श्रद्धा और भक्ति के साथ श्रृंगार किया जाता है और उसके बाद रावण की आरती उतारी जाती है तथा शाम को दशहरे में रावण के पुतला दहन के बाद इस मंदिर के दरवाजे एक साल के लिए बंद कर दिए जाते हैं। यह मंदिर 24 अक्टूबर को सुबह खुलेगा और शाम को पूजा-पाठ के बाद बंद हो जाएगा।

रावण के इस मंदिर में होने वाले समस्त कार्यक्रमों के संयोजक केके तिवारी ने ने बताया कि शहर के शिवाला इलाके में कैलाश मंदिर परिसर में मौजूद विभिन्न मंदिरों में भगवान शिव



मंदिर के पास ही लंका के राजा रावण का मंदिर है। यह मंदिर करीब 122 साल पुराना है और इसका निर्माण महाराज गुरु प्रसाद शुक्ल ने कराया था। मंदिर के संयोजक तिवारी बताते हैं कि इस मंदिर को स्थापित करने के पीछे यह मान्यता थी कि रावण प्रकांड पंडित होने के साथ साथ भगवान शिव का परम भक्त था, इसलिए शक्ति के प्रहरी के रूप में यहाँ कैलाश मंदिर परिसर में रावण का मंदिर बनाया गया था।



रावण की मृत्यु से पहले हुई थी यह घटना

इस बात को तो सभी जानते हैं कि भगवान राम ने आश्विन शुक्ल दशमी तिथि को लंकापति रावण को मार था। लेकिन रावण को मारना भगवान राम के भी वश की बात नहीं थी। रावण को मारने से पहले भगवान राम ने ऐसी चाल चली कि, जो देवी रावण की रक्षा कर रही थी वही रावण की मौत का कारण बन गयी।

शास्त्रों में उल्लेख मिलता है कि मां दुर्गा का छटा स्वरूप है देवी कात्यायनी का। देवी ने ऋषि कात्यायन को उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर पुत्री रूप में प्राप्त होने का वरदान दिया था। इसी वरदान के फलस्वरूप देवी कात्यायनी का जन्म हुआ। पुत्री रूप में देवी ने तीन दिनों तक ऋषि कात्यायन की पूजा स्वीकार की इसके बाद देवी अष्टभुजा रूप में प्रकट हुई और इन्होंने महिषासुर का वध किया।

पुराणों में उल्लेख मिलता है कि जब भगवान विष्णु श्री कृष्ण रूप में प्रकट हुए तब ब्रज की कन्याओं ने कृष्ण को पति रूप में पाने के लिए देवी कात्यायनी की पूजा की। इसलिए यह देवी ब्रज मण्डल की अधिष्ठात्री देवी कहलाती हैं। नवरात्र के छठे दिन इसी देवी की पूजा होती है। आज चैत्र नवरात्र का छठा दिन है। आज देवी के इसी स्वरूप की पूजा हो रही है।

देवी पुराण में उल्लेख मिलता है कि रावण भगवान शिव के साथ ही आदि शक्ति देवी कात्यायनी का भक्त था। रावण की भक्ति के कारण देवी अपनी योगिनियों के साथ लंका में वास करती थीं जिससे रावण अजेय हो गया था।

देवी कात्यायनी की सुरक्षा प्राप्त होने के कारण रावण देवताओं को कष्ट पहुंचाने लगा। देवताओं ने भगवान विष्णु से रावण से मुक्ति दिलाने की प्रार्थना की। भगवान विष्णु सोच में पड़ गये कि देवी कात्यायनी से सुरक्षा प्राप्त होने के कारण रावण को मारना उनके लिए कठिन है। इस समस्या का हल निकालने के लिए भगवान विष्णु देवी कात्यायनी के पास गये।

भगवान विष्णु ने कात्यायनी से कहा कि आपसे सुरक्षा प्राप्त होने के कारण रावण निर्भय होकर अत्याचार कर रहा है। इसका अंत करना आवश्यक है इसलिए आप अपनी सुरक्षा हटा लीजिए। भगवान विष्णु की प्रार्थना से प्रसन्न होकर देवी ने कहा कि आप रामावतार लीजिए, इस अवतार में देवी लक्ष्मी सीता रूप में आपकी सहायता करेंगी। ?

देवी लक्ष्मी मेरा ही स्वरूप हैं। जब रावण सीता का हरण करेगा तो वह मेरा अपमान होगा जिससे मैं अपनी सुरक्षा हटा लूंगी और आप रावण का वध करने में सफल होंगे।

भगवान राम ने रावण से युद्ध करने के पहले देवी कात्यायनी की आराधना की और देवी से रावण को दी गयी सुरक्षा हटाने की प्रार्थना की। भगवान विष्णु को दिये गये वचन के अनुसार देवी लंका त्याग कर अपने लोक में चली गयी और भगवान राम रावण का वध करने में सफल हुए। मान्यता यह भी है कि भगवान राम ने जिस वाण से रावण का वध किया था वह वाण राम को देवी कात्यायनी द्वारा प्रदान किया गया था।

‘द वन फोर्स ऑफ द फारेस्ट’ की कामयाबी से खुश हैं तमन्ना



तमन्ना भाटिया इंडस्ट्री की उन एक्ट्रेसस में से हैं, जिन्हें बॉलिवुड का लकी मस्कट कहा जाता है। वे अपने निर्माता-निर्देशकों के लिए काफी लकी मानी जाती हैं। इंडस्ट्री में तकरीबन 20 साल बिता चुकी तमन्ना साउथ के बाद बॉलिवुड की भी चाहती अभिनेत्री बन गई हैं। इन दिनों वे चर्चा में यहीं अपनी नई फिल्म ‘द वन फोर्स ऑफ द फारेस्ट’ से। फिल्म बॉक्स ऑफिस पर अच्छी कमाई कर रही है और तमन्ना की मूमिका को भी खूब सराहना मिली है।

बॉक्स ऑफिस पर अपनी फिल्म को मिली कामयाबी को लेकर तमन्ना बहुत खुश हैं। वे कहती हैं, ‘इंटरनेट पर मैंने देखा कि लोग थिएटर के बाहर चप्पल उतारकर अंदर जा रहे हैं, पॉपकॉर्न की जगह ठेकुआ बांट रहे हैं। बिहार का ये खूबसूरत कल्चर हमने पहली बार इतने बड़े पैर पर देखा है। दिवाली और दूसरे त्योहार तो स्क्रीन पर खूब दिखे हैं, लेकिन छठ महापर्व को इस तरह पहले कभी नहीं देखा। मुझे लगता है कि हमारी संस्कृति और परंपराएं ही वो पल हैं, जो दर्शकों को जोड़ रहे हैं।

हैं, जो दर्शकों को जोड़ रहे हैं। फोकलोर को सिर्फ रेगुलर तरीके से दिखाने के बजाय उसे बड़े स्टाइल में, खासकर फैमिली ऑडियंस के लिए पेश किया गया है। आज हमें एक ही जॉनर की नहीं, बल्कि मल्टी-जॉनर फिल्मों की जरूरत है, जो अलग-अलग तरह के दर्शकों को एक साथ एंगेज करें और जिनका कोर हमारी संस्कृति से जुड़ा हो। इस फिल्म में छठी मैया के गाने और छठ महापर्व को जिस तरह कहानी का हिस्सा बनाया गया है, उसने दर्शकों को बहुत आकर्षित किया। इंटरनेट पर मैंने देखा कि लोग थिएटर के बाहर चप्पल उतारकर अंदर जा रहे हैं, पॉपकॉर्न की जगह ठेकुआ बांट रहे हैं। बिहार का ये खूबसूरत कल्चर हमने पहली बार इतने बड़े पैर पर देखा है। दिवाली और दूसरे त्योहार तो स्क्रीन पर खूब दिखे हैं, लेकिन छठ महापर्व को इस तरह पहले कभी नहीं देखा। मुझे लगता है कि हमारी संस्कृति और परंपराएं ही वो पल हैं, जो दर्शकों को जोड़ रहे हैं।

ऐसे कांड दुखद और दुर्भाग्यपूर्ण हैं

हाल ही में तमन्ना एक पौराणिक फिल्म का हिस्सा रही हैं। हमने तमन्ना से जानना चाहा कि एक तरफ हमारे यहां नारियों को पूजा जाता है, मगर दूसरी तरफ आए दिन जमुई कांड और आस्था कुंज गैंगरेप

जैसे दरिदगी से भरी घटनाएं जारी हैं। इस पर वे कहती हैं, ‘मेरा मानना है कि समाज में अच्छे भी हैं और बुराई भी, तो हमारी जिम्मेदारी ये है कि हम बार-बार उस अच्छाई को जागरूक करते रहें, क्योंकि बुराई को हम पूरी तरह से रोक तो नहीं पाएंगे। मगर जब हम बार-बार अच्छाई को उभारेंगे, तो उस स्थिति से निपट पाएंगे। ये जितनी भी घटनाएं होती हैं, बहुत ही दुखद और दुर्भाग्यपूर्ण हैं, मगर एक कलाकार का काम है कि वह अपनी कला से लोगों को महसूस करा सके कि अच्छाई बाकी है, तो उसे बार-बार बुलंद करना होगा। मेरे हाथ में ये हैं और मैं ये कोशिश लगाता करती रहती हूँ।’

माता-पिता हमेशा मेरा सपोर्ट सिस्टम रहे

तकरीबन हर लड़की कभी न कभी किसी छेड़खानी का शिकार हुई होती है, ऐसे में तमन्ना खुद को खुशकिस्मत मानती हैं कि उनके साथ ऐसी घटना कभी हुई। वे कहती हैं, ‘मैं बहुत लकी हूँ, मेरे माता-पिता ने मुझे हमेशा प्रोटेक्ट किया। मैंने बहुत छोटी उम्र में काम करना शुरू कर दिया था। अगर उनका सपोर्ट न होता, तो मुझे जिंदगी के बेस्ट अनुभव नहीं मिलते। मगर मेरा बचपन बहुत शानदार रहा। मेरी किशोरावस्था में भी वे हमेशा मेरे साथ थे। आज भी मेरे पास उनके जैसा एक मजबूत सपोर्ट सिस्टम है।

मैं इस मामले में भाग्यशाली हूँ कि पेरेंट्स के साथ ने मुझे हमेशा सुरक्षित रखा। मेरे साथ ऐसा कोई बुरा अनुभव नहीं हुआ, मगर मैंने ऐसी कई कहानियां सुनी हैं और मुझे सहानुभूति है। जिनके साथ ऐसा होता है, वो बहुत दर्दनाक होता है।’

पैप्स का जॉब बहुत मुश्किल होता है

पैपराजी की पसंदीदा अभिनेत्रियों में से हैं तमन्ना। उन्हें दूसरे कई कलाकारों की तरह पैप्स से घिड़ते नहीं देखा है। वे कहती हैं, ‘हमारे पैप्स बहुत स्वीट हैं। वो भी हमारे और आपके जैसे लोग हैं। मैं लोगों में अंतर नहीं देखती हूँ। वो भी इसान हैं और बहुत मेहनत करते हैं। कई बार घंटों इंतजार करते हैं कि स्टार्स आएँ और वे पिकस विलक करें। उनका काम बहुत मुश्किल है। इसान बहुत सरल होते हैं, उन्हें सिर्फ प्यार और सम्मान की चाह होती है। अगर आप उन्हें वो प्रेम और सम्मान दें, तो वो भी खुश रहेंगे, आप भी।’ कपेनियनशिप के बारे में वे कहती हैं, ‘बहुत जरूरी है ये की आपके पास एक अच्छा साथी हो। अच्छा साथी आपको मजबूत और खुशनुमा फील कराता है।’



मॉन्स्टर में सलमान बने सीक्रेट रॉ एजेंट

सलमान खान और निर्देशक वामसी पेडिपल्ली की फिल्म ‘मॉन्स्टर’ को लेकर एक्सक्लूसिव डिटेल्स सामने आई हैं। सुर्जों के मुताबिक फिल्म में सलमान हिंडन आइडेंटिटी वाले रॉ अधिकारी की भूमिका में हैं। इससे पहले वह यशराज की ‘टाइगर’ फ्रेंचाइज में रॉ एजेंट का किरदार निभा चुके हैं लेकिन इस फिल्म में उनका किरदार अपनी पहचान छिपाकर आगे बढ़ता जाता है। कहानी में उसकी असली पहचान धीरे-धीरे सामने आएगी। फिल्म में सलमान के किरदार का एक बड़ा टकराव अभिमन्यु सिंह के किरदार से होता है, जो डेयरी ऑनर की भूमिका में है। डेयरी परिसर और उससे जुड़े फेक्ट्री एरिया में बड़े एक्शन सीक्वेंस फिल्माए गए हैं। सलमान हैंड-टू-हैंड कॉम्बैट के साथ आस-पास मौजूद चीजों को भी लड़ाई का हिस्सा बनाते दिखेंगे। इस सीक्वेंस का अंत बड़े ब्लास्ट्स के साथ होता दिखेगा।

अरविंद स्वामी फिल्म में एक पुलिस अधिकारी बने हैं

डेयरी वाला सीक्वेंस खत्म होने के बाद कहानी का फोकस रेलवे और नेपाल ट्रेक की तरफ बढ़ता है। नेपाल जाने वाली ट्रेन में एक बड़ा एक्शन सीक्वेंस है, जिसमें ‘रोजा’ फेम अरविंद स्वामी भी अहम भूमिका में हैं। अरविंद फिल्म में पुलिस अधिकारी की भूमिका में हैं। उनका ट्रेक कहानी के बड़े कॉन्फ्लिक्ट से जुड़ा है और ट्रेन वाला सीक्वेंस इसी का अहम हिस्सा होगा। ट्रेन के सुरंग में प्रवेश करने के दौरान चेज, अरेस्ट और एक्सेप की परिस्थितियां बनती हैं। इसी दौरान सलमान का कई लोगों से सामना होता है। सितंबर के आखिरी सप्ताह में मुंबई में सलमान और अरविंद ने इसकी शूटिंग की।



सनी की फिल्म ‘इक्का 2’ की तैयारी हुई शुरू

सनी देओल की कोर्टरूम ड्रामा फिल्म ‘इक्का’ के दूसरे पार्ट को लेकर नई जानकारी सामने आई है। फिल्म की कहानी लिखने का काम शुरू हो चुका है और इसके अगले साल आगे बढ़ने की उम्मीद है। पहले पार्ट में वकील अर्जुन मेहरा के किरदार में नजर आए सनी एक बार फिर मुख्य भूमिका निभाएंगे। अभी इसकी शूटिंग शुरू होने की तारीख और रिलीज को लेकर कोई घोषणा नहीं हुई है। ‘इक्का’ के पहले पार्ट में अक्षय खन्ना ने भी अहम भूमिका निभाई थी। फिल्म में उनके और सनी के किरदारों के बीच टकराव कहानी का महत्वपूर्ण हिस्सा था। दोनों कलाकारों को एक साथ देखने का मौका मिलने से भी फिल्म को लेकर दर्शकों में उत्सुकता थी। अब दूसरे पार्ट में अक्षय के शामिल नहीं होने की खबर सामने आई है।



राधिका ने बताया खुद को ट्रोलिंग से कैसे बचाया

बॉलिवुड अभिनेत्री राधिका मदान ने महिलाओं के लुक को लेकर दबाव डोलने पर बात की। इसके साथ ही एक्ट्रेस ने सोशल मीडिया पर लेवेलस के लुक को ट्रोल करने पर भी काफ़ी कुछ कहा।

राधिका मदान ने बॉडी शैमिंग को लेकर अपना निजी संघर्ष भी साझा किया। उन्होंने बातचीत में कहा, ‘मैंने फिल्म ‘पटाखा’ के लिए 15 किलो वजन बढ़ाया था और ‘शिद्दत’ व ‘अंग्रेजी मीडियम’ के लिए मैं वह वजन घटा रही थी। इस दौरान मुझे कहा गया कि मैं बहुत मोटी हो गई हूँ और हीरोइन कैसे बन सकती हूँ? इसके बाद लगातार शूटिंग करते हुए मेरा वजन घटता रहा और मैं बिल्कुल हड्डियों का ढांचा बन गई।’ आगे अपने इंटरव्यू में राधिका ने कहा, ‘मैंने खुद से पूछा कि मैं लोगों को खुश करने की कोशिश क्यों कर रही हूँ, जबकि वे कभी खुश नहीं होंगे? इसलिए, मैंने एक खास शारीरिक बनावट पाने की चाहत के बजाय स्वास्थ्य रहने पर ध्यान देना शुरू किया। एक बार जब आप ऐसा कर लेते हैं, तो दूसरों की राय आपको प्रभावित नहीं करती, क्योंकि आप समझदार हो जाते हैं। आपको नहीं पता कि उनकी आलोचना किस असुरक्षा से उपजी है। लेकिन मुझे इस बात का सुकून है कि अब मैं स्वास्थ्य को प्राथमिकता दे रही हूँ।’



नकुल धुल के एक्विशन पर एल्विश ने दी प्रतिक्रिया

रियलिटी शो ‘बिग बॉस-20’ के घर में वाइल्ड कार्ड कंटेस्टेंट के तौर पर आए सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर नकुल धुल (मिडू डॉन) और गुल्लू (कुशल तंवर) के बीच तीखी हाथापाई हो गई। इसी पुरे झगड़े पर अब यूट्यूबर और बिग बॉस ओटीटी-2 के विनर एल्विश यादव ने भी अपनी प्रतिक्रिया दी। बताया जा रहा है कि दोनों के बीच बहस इतनी बढ़ गई कि मामला हाथापाई तक पहुंच गया। इस शारीरिक हिंसा के बाद शो के नियमों के मुताबिक मेकर्स ने नकुल धुल को घर से बाहर निकाल दिया है। इसी पुरे मामले पर अब यूट्यूबर और बिग बॉस ओटीटी 2 के विनर एल्विश यादव ने अपना रिप्लेशन दिया है। उन्होंने सोशल मीडिया

प्लेटफॉर्म एक्स पर नोट शेयर किया, जिसमें उन्होंने नकुल को इंडायरेक्टली तंज कसा। एल्विश यादव ने लिखा, ‘बहुत दिनों बाद आज बिग बॉस देखा। नियम बदल गए हैं, अब शादद जो भी घर में बड़े या समझदार की तरह रहता है उसे ही निकाल देते हैं। दुख हुआ देखकर।’ एल्विश यादव के इस कमेंट ने सोशल मीडिया पर टकराव और भी ज्यादा बढ़ा दिया है, जिससे दोनों के फैस के बीच सोशल मीडिया वॉर छिड़ गया है। जहां एक तरफ एल्विश यादव गुल्लू के साथ खड़े हैं, वहीं दूसरी ओर रजत दलाल और लक्ष्य चौधरी जैसे बड़े नाम इस लड़ाई में नकुल धुल के गेमाले और उनके इम्पैक्ट का समर्थन करते नजर आ रहे हैं।

दरअसल, काजी तौकीर ने स्काउट ओपी के बारे में कुछ कहा था, जिसे लेकर नकुल धुल ने स्काउट के सामने यह बात उठाई। जब काजी और स्काउट के बीच बहस हो रही थी, तब गुल्लू (कुशल तंवर) बीच-बचाव करने और मामला शांत कराने पहुंचे। नकुल धुल इस बात पर भड़क गए कि गुल्लू उन्हें समझाने वाले कौन होते हैं। बहस इतनी बढ़ी कि नकुल और गुल्लू के बीच धक्का-मुक्की और हाथापाई हो गई। घर के सदस्यों के बीच-बचाव के बावजूद, फिजिकल वायलेंस (हिंसा) के नियमों के चलते बिग बॉस ने नकुल धुल को तुरंत घर से बाहर (बेघर) कर दिया।



रणबीर कपूर की ‘रामायण’ में जटायु के रूप में दिखेंगे अनुपम खेर

रणबीर कपूर की फिल्म ‘रामायण’ को लेकर दर्शकों की एक्साइटमेंट लगातार बढ़ रही है। अब फिल्म के मेकर्स ने जटायु के किरदार का पहला पोस्टर जारी किया है। फिल्म में जटायु के किरदार को एक्टर अनुपम खेर अपनी आवाज देंगे। ‘द विंग्स ऑफ धर्मा’ टाइटल वाले इस पोस्टर में जटायु की तेज नजरों की झलक दिखाई गई है। वहीं, दूसरे विजुअल में जटायु अपने विशाल पंख फैलाए नजर आ रहे हैं। मेकर्स फिल्म के अलग-अलग किरदारों के पोस्टर जारी कर रहे हैं और इसी कड़ी में जटायु का लुक सामने

आया है। मेकर्स ने सोशल मीडिया पर पोस्टर शेयर करते हुए लिखा, ‘जब बुराई ने उड़ान भरी, तो उसका सामना करने के लिए साहस खड़ा हुआ। उसने जीत के लिए नहीं, बल्कि सही के लिए लड़ाई लड़ी। जटायु। द विंग्स ऑफ धर्मा। ‘रामायण’ में जटायु के रूप में अनुपम खेर।’ रामायण की कहानी में जटायु का किरदार साहस, बलिदान और धर्म की मिसाल माना जाता है। जब रावण माता सीता का हरण करके उन्हें लंका ले जा रहा था, तब जटायु ने उसे रोकने की कोशिश की थी। वह जानते थे कि रावण से मुकाबला करना आसान नहीं होगा, इसके बावजूद उन्होंने सीता को बचाने के लिए उससे युद्ध किया। इस दौरान जटायु गंभीर रूप से घायल हो गए, लेकिन उन्होंने अपनी आखिरी सांसों तक धर्म का साथ नहीं छोड़ा।

इससे पहले मेकर्स फिल्म से भगवान राम, कैकेयी और कुछ अन्य किरदारों के पोस्टर भी जारी कर चुके हैं। फिल्म में रणबीर कपूर भगवान राम, साई पल्लवी माता सीता, यश रावण, सनी देओल हनुमान और रवि दुबे लक्ष्मण के किरदार में नजर आएंगे। नितेश तिवारी के निर्देशन में बन रही ‘रामायण’ दो हिस्सों में रिलीज होगी। फिल्म को नमित मल्होत्रा के प्राइम फोकस स्टूडियोज ने डीएनडीजी और यश की मॉन्स्टर माईंड क्रिएशंस के साथ मिलकर बनाया है। फिल्म का पहला पार्ट 5 नवंबर 2026 को दुनियाभर के सिनेमाघरों में रिलीज होने वाला है, जबकि दूसरा पार्ट दीपावली 2027 पर रिलीज होगा।

डीडीए के नवरात्रि महोत्सव में अनेक महानुभावों ने पहुंचकर गरबा खेलैयाओं का बढ़ाया हौसला



असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण, 19 अक्टूबर। डीडीए द्वारा दलितपनगर ग्राउंड में आयोजित नवरात्रि महोत्सव में प्रतिदिन अनेक महानुभावों के पहुंचने का सिलसिला जारी है। महानुभावों द्वारा खेलैयाओं का उत्साह बढ़ाया जा रहा है। वहीं डीडीए की टीम द्वारा उपस्थित अतिथियों को भी किया जा रहा है। इसी क्रम में डीडीए के नवरात्रि महोत्सव में कोस्टगार्ड एयर स्टेशन दमण के कर्माडिंग

ऑफिसर डीआईजी आलोक नेगी, दमण होटल एसो. प्रेसिडेंट हरीश टंगल सहित अनेक अग्रणियों ने उपस्थित रहकर गरबा खेलैयाओं का उत्साह बढ़ाने के साथ ही बेहतरीन गरबा खेलैयाओं को पुरस्कृत भी किया। डीडीए की टीम द्वारा उपस्थित महानुभावों का गर्मजोशी के साथ स्वागत किया गया। दलितपनगर ग्राउंड में आयोजित नवरात्रि महोत्सव को सफल बनाने के लिए डीडीए चेयरमैन लखम

टंडेल और उनकी टीम तथा बड़ी संख्या में गरबा खेलैया दलितपनगर महिला मंडल की टीम पूरी मेहनत कर रही है। धजकर गरबा खेलने पहुंच रहे डीडीए के नवरात्रि महोत्सव में हैं।

कचीगाम सरपंच फाल्गुनी पटेल ने विभिन्न दुर्गा पूजा पंडालों में पहुंचकर माँ अंबे की उतारी आरती, लिया आशीर्वाद



असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण, 19 अक्टूबर। नवरात्रि के पावन अवसर पर कचीगाम ग्राम पंचायत सरपंच फाल्गुनी पटेल ने विभिन्न दुर्गा पूजा पंडालों में पहुंचकर अंबा माता की आरती उतारी और उनका आशीर्वाद लिया। इस अवसर पर फाल्गुनी पटेल ने माँ दुर्गा की आराधना करके प्रदेश एवं देश में सुख, शांति और खुशहाली की कामना की। उन्होंने सभी के जीवन में समृद्धि और खुशहाली बनी रहे इसके लिए माँ जगदंबा से प्रार्थना की। विभिन्न दुर्गा पूजा पंडालों में पहुंचने पर फाल्गुनी पटेल का दुर्गा पूजा गया। इन अवसरों पर भाजपा के कार्यकर्ता भी उपस्थित रहे।

पर फाल्गुनी पटेल का दुर्गा पूजा गया। इन अवसरों पर भाजपा के कार्यकर्ता भी उपस्थित रहे।

दमण-खारीवाड में उत्साह एवं भक्तिभाव से नवरात्रि उत्सव एवं गरबा प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

डीएमसी काउंसिलर अस्मी दमणिया, पूर्व काउंसिलर परसीस दमणिया एवं शहरेवर दमणिया द्वारा आयोजित कार्यक्रम में प्रदेश भाजपा अध्यक्ष महेश आगरिया, महामंत्री सुनील पाटिल, जिला अध्यक्ष भरत पटेल, कोषाध्यक्ष संजयभाई, डीएमसी प्रेसिडेंट दीपिका टंडेल, काउंसिलरों में पीयूष पटेल, कल्पेश सीताराम, तमन्ना मिठाणी, रश्मी हलपति, पूर्व काउंसिलर जसविंदर कौर, किर्तीभाई, मनीषभाई सहित अन्य महानुभावों की रही उपस्थिति



असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण, 19 अक्टूबर। दमण के खारीवाड विस्तार स्थित अंबा माता मंदिर परिसर में 18 अक्टूबर को उत्साह और भक्तिभाव के साथ नवरात्रि उत्सव एवं गरबा प्रतियोगिता का आज आयोजन किया गया था। इस नवरात्रि उत्सव गरबा प्रतियोगिता का आयोजन डीएमसी काउंसिलर अस्मी दमणिया, पूर्व काउंसिलर परसीस दमणिया एवं शहरेवर दमणिया द्वारा किया गया था। कार्यक्रम की शुरुआत अंबा माता की आरती और प्रार्थना के साथ की गई। इस अवसर पर बड़ी संख्या में लोगों ने पारंपरिक परिधान में सज होकर गरबा प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। इस अवसर पर प्रदेश भाजपा अध्यक्ष महेश आगरिया, महामंत्री सुनील पाटिल, जिला अध्यक्ष भरत पटेल, कोषाध्यक्ष संजयभाई, डीएमसी प्रेसिडेंट दीपिका टंडेल, काउंसिलरों में पीयूष पटेल, कल्पेश सीताराम, तमन्ना मिठाणी, रश्मी हलपति, पूर्व काउंसिलर जसविंदर कौर, किर्तीभाई, मनीषभाई सहित अन्य महानुभावों ने उपस्थित रहकर गरबा



खेलैयाओं का उत्साह बढ़ाया और विजेता बने प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किया। बड़ी संख्या में भाई-बहनों और वरिष्ठ नागरिकों ने आरती और गरबा प्रतियोगिता में सक्रिय रूप से भाग लिया, जो सांस्कृतिक भक्ति और सामुदायिक जुड़ाव को प्रदर्शित करता है। उत्सव के दौरान अस्मी दमणिया और परसीस दमणिया ने सभी के लिए निरंतर शांति, सद्भाव और समृद्धि के आशीर्वाद के साथ-साथ समुदाय के प्रत्येक व्यक्ति की सफलता और कल्याण की कामना करते हुए अंबा माता से प्रार्थना की।

दीव पुलिस को मिली बड़ी कामयाबी: 48 घंटे के भीतर सुलझाया चोरी का मामला, दो आरोपी गिरफ्तार



असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दीव 19 अक्टूबर। दीव पुलिस ने 48 घंटे के भीतर चोरी का मामला सुलझाते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। दीव पुलिस द्वारा जारी प्रेस नोट में बताया गया है कि 17/10/2026 को दीव के केवडी निवासी 59 वर्षीय प्रेमजी गुड्डला ने शिकायत दर्ज कराई कि पिछली रात केवडी इलाके में यूके में रहने वाले लोगों के घरों को निशाना बनाकर चोरी की गई है। पानीबेन वीरा से सूचना मिलने पर, शिकायतकर्ता अपने रिश्तेदार मंजुला मोहनलाल के घर गए, जो दीव के केवडी में एजुकेशन हब के सामने स्थित है। वहां उन्होंने देखा कि ताले, गेट और खिड़की की ग्रिल टूटी हुई थी और घर का सामान इधर-उधर बिखरा पड़ा था। बताया गया है कि उस घर से लगभग 266 ग्राम सोने के आभूषण, 10 ग्राम से अधिक चांदी के आभूषण और 1,00,000 रुपये नकद चोरी हुए हैं। इसके अलावा जिया रिफ्रेजरेट शॉप/कैंटीन से 30,000 रुपये नकद चोरी होने की सूचना मिली, जबकि नवीन भीखा के घर से चांदी की दो चूड़ियां, चांदी की पायल की एक जोड़ी और 85,000 रुपये नकद चोरी हुए। साथ ही सात अन्य घरों के ताले भी टूटे हुए पाए गए, हालांकि उन घरों में चोरी की पुष्टि नहीं हुई है। इस संबंध में 17/10/2026 को दीव के वणाकबारा कोस्टल पुलिस स्टेशन में भारतीय न्याय संहिता 2023 की धारा 305(ए), 331(4), 61 और 3(5) के तहत मामला दर्ज किया गया। दीव पुलिस अधीक्षक और उप-विभागीय पुलिस अधिकारी के मार्गदर्शन और देखरेख में एक विशेष जांच टीम का गठन किया गया। इस टीम में स्पेशल स्टफ टीम, विभिन्न पुलिस स्टेशनों की एसएचओ टीमों और दीव पुलिस मुख्यालय के पुलिस निरीक्षक शामिल थे। इस टीम का उद्देश्य मामले को जल्द से जल्द सुलझाना और आरोपियों को गिरफ्तार करना था। पुलिस टीम ने कई सीसीटीवी कैमरों की फुटेज की बारीकी से जांच करके, अपराध स्थल से मिले सुरागों का पीछा करके, मुखबियों से जानकारी जुटाकर और तकनीकी सबूतों का विश्लेषण करके गहन जांच की। समन्वित प्रयासों, व्यवस्थित विश्लेषण और लगातार जांच के जरिए, दीव

पुलिस ने मामला दर्ज होने के 48 घंटों के भीतर ही इसे सफलतापूर्वक सुलझा लिया। जांच के दौरान आरोपियों का पता लगाया गया और उन्हें गुजरात के राजकोट जिले के जेतपुर और अमरेली जिले के खंभा से गिरफ्तार किया गया। इतनी जल्दी मामले का खुलासा होना, अपराध को रोकने और उसका पता लगाने तथा नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के प्रति दीव पुलिस की प्रतिबद्धता, पेशेवर दक्षता और उनके समन्वित प्रयासों को दर्शाता है। गिरफ्तार आरोपियों में मेहुल जीतू सोलंकी (33 वर्ष) निवासी- भगवतीपारा, तहसील- खंभा, जिला- अमरेली, गुजरात और विपुलवल्लभ कवैथिया (29 वर्ष) वर्तमान पता- कमरा नंबर 502, आवास योजना, देरिनी धार, जेतपुर, राजकोट, गुजरात, मूल निवासी कुबलियापारा, शेरी नंबर 05, नवलखी माता मंदिर के पास, राजकोट, गुजरात तथा स्थायी पता गांव- गालकोटाडी, तहसील- बाबरा, जिला- अमरेली, गुजरात शामिल हैं। पुछताछ के दौरान आरोपियों ने अपराध में अपनी सलिप्तता स्वीकार कर ली और उन्हें 19/10/2026 को गिरफ्तार कर लिया गया। आरोपियों को माननीय न्यायालय के समक्ष पेश किया गया, जहां से उन्हें 26/10/2026 तक पुलिस रिमांड पर भेज दिया गया। मामले की आगे की जांच विपुलवल्लभ कवैथिया (29 जारी है।

श्री माछी महाजन स्कूल में नवरात्रि महोत्सव का हुआ भव्य आयोजन



असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण, 19 अक्टूबर। श्री माछी महाजन एजुकेशन सोसायटी द्वारा संचालित श्री माछी महाजन स्कूल नानी दमण में 16 अक्टूबर 2026 को नवरात्रि महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के विद्यार्थियों ने पारंपरिक वेशभूषा में सज-धजकर उत्साहपूर्वक भाग

लिया। माता रानी की आरती एवं पूजा-अर्चना के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। इसके पश्चात विद्यार्थियों ने रंग-बिरंगी चनिया-चोली एवं पारंपरिक परिधानों में गरबा प्रस्तुत कर भारतीय संस्कृति और परंपराओं की सुंदर झलक दिखाई। पूरे कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों में उत्साह, उमंग और भक्तिभाव देखने को मिला। इस आयोजन का उद्देश्य विद्यार्थियों में भारतीय संस्कृति, धार्मिक संस्कार, एकता और सामूहिक सहभागिता की भावना को प्रोत्साहित करना था। विद्यालय के प्रबंधन मंडल, प्रधानाचार्य, शिक्षकगण एवं समस्त स्टाफ के सहयोग से नवरात्रि महोत्सव हर्षोल्लास एवं भक्तिमय वातावरण में संपन्न हुआ।



स्व. अशोकभाई मोहनभाई पटेल
स्व. ता. 20/10/2014

११मी पुण्यतिथि श्रद्धांजलि

परिश्रम भरेपु ज़ुपन ज़ुपी सुभ सहुने आपी गया,
दुःखने एभाडयु नही, ज़ुपनभर मेहनत करी आपे दुःखना
दरीया पेदी कुंभने सुभना सागरमां तरतां मुकी गया,
हृदयमांथी आपनी स्मृति क्षाए पल पिसराती नथी.
प्रभु आपना दिव्य आत्माने परम शांति अर्पे अंज आभारी प्रार्थना.
ॐ शांति... ॐ शांति... ॐ शांति...

रतिभेन मोहनभाई पटेल (माता)
कुसुमभेन अशोकभाई पटेल (पत्नी)
पिकलभाई अशोकभाई पटेल (पुत्र),
विवेकभाई अशोकभाई पटेल (पुत्र) तथा सभस्त पटेल परिवार
निवास स्थान: भरपड पटेल इगिया, नानी दमण

धनश्री पॉलिमर्स

प्राइवेट लिमिटेड

तत्काल आवश्यकता है

हमें असंगोने (महाराष्ट्र) में प्लास्टिक इंडस्ट्री के लिए तुरंत लोगों की आवश्यकता है...

- शिफ्ट सुपरवाइजर - 3 व्यक्ति और इंजीनियर - 1 व्यक्ति
प्लास्टिक इंडस्ट्री में कम से कम 3 साल का अनुभव
- प्लास्टिक ब्लो मोल्डिंग मशीन ऑपरेटर
3 साल का अनुभव
- सेल्स पर्सन
जिनकी फार्मा और केमिकल इंडस्ट्री में जान-पहचान हो।

इच्छुक उम्मीदवार तुरंत आवेदन कर सकते हैं या जल्द से जल्द हमसे संपर्क कर सकते हैं

+91 96193 11323